RNI:UPHIN/2016/46009
RNP/SHN/18/2025-27

तारतम मंजरी

वर्ष १० अंक १० अक्टूबर २०२५ बुद्धजी शाका ३४७ विक्रम सवंत् २०८२ पृष्ठ संख्या ३२

श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ

नकुड़ रोड़, सरसावा, जिला सहारनपुर-247232 (उ.प्र)

श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ

श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ की स्थापना वर्ष 2005 में सरसावा, जिला सहारनपुर (उत्तर प्रदेश) में श्री राजन स्वामी जी द्वारा की गई थी। इसका प्रमुख उद्देश्य ज्ञान, शिक्षा, उच्च आदर्श, पावन चरित्र व भारतीय संस्कृति का समाज में प्रचार करना तथा वैज्ञानिक सिद्धान्तों पर आधारित आध्यात्मिक मूल्यों द्वारा मानव को महामानव बनाना है। इसके साथ ही यह संस्था श्री प्राणनाथ जी की अलौकिक वाणी का प्रकाश फैलाकर सम्पूर्ण विश्व को एक सच्चिदानंद परब्रह्म के प्रेममयी आंगन में भाव-विभोर करने के लिए कृत संकल्पित है। इसके लिए उच्च माध्यमिक शिक्षा प्रदान कर ऐसे विद्वानों को तैयार किया जा रहा है जो संसार को धर्म के वास्तविक स्वरूप का बोध करा सकें और सच्चिदानंद परब्रह्म के साक्षत्कार का यर्थाथ मार्ग दर्शा सकें।

ज्ञानपीठ में उपलब्ध सुविधाओं में मुख्यतः शिक्षा कक्ष, पुस्तकालय व वाचनालय, ध्यान कक्ष, प्रवचन कक्ष, कम्प्यूटर कक्ष, दृश्य-श्रव्य स्टूडियो, छात्रावास, भोजनालय, मुद्रणालय, गौशाला इत्यादि सम्मिलित है।

कालान्तर में ज्ञानपीठ की पन्ना (मध्य प्रदेश), बड़ोदरा (गुजरात), दाहोद (गुजरात), सिक्किम तथा तालावाड़ि (तमिलनाडु) में शाखाएं श्री प्राणनाथ ज्ञान केन्द्र के नाम से स्थापित की गई हैं जो समाज में ब्रह्मज्ञान का आध्यत्मिक शिक्षा का प्रचार-प्रसार करने में निरन्तर कार्य कर रही हैं।

: सम्पर्क करें :

श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ

नकुड़ रोड़, सरसावा, जिला सहारनपुर-247232 (उ.प्र.)

E-mail : shriprannathgyanpeeth@gmail.com

Website : www.spjin.org • **WhatsApp:** +91 +91 75338 76060

तारतम मंजरी

वर्ष 10 • अंक 10 • अक्टूबर 2025 • बुद्धजी शाका 347

विक्रम संवत् 2082

प्रेरणा स्रोत

राजन स्वामी

•

मुख्य संपादक

आचार्य सुभाष

9725389547

•

संपादक

कृष्ण कुमार कालड़ा

9414846972

• • •

इस अंक में

	सम्पादकीय	**3**
1.	**भ्रांतिनाशनम् प्रश्नमाला 4** — राजन स्वामी	**4**
2.	**अब तुम निकसो नींद से** — डॉ. प्रवीण बत्रा	**11**
3.	**भारतीय समाज में जाति प्रथा** — राजदिल	**15**
4.	**सो अब कहाँ है महमंद?** — सोम सी. बारिया	**18**
5.	**प्रलय : तात्विक व आध्यात्मिक दृष्टिकोण** — अमृत शर्मा	**20**
6.	**हमारा अकल्पनीय सौर मंडल** — गीता चौहान	**21**
7.	**१६वां वार्षिक उत्सव**	**23**
8.	**१६वां वार्षिक उत्सव : आगंतुक सुंदरसाथ के अनुभव**	**25**
9.	**श्री प्राणनाथ कन्या गुरुकुल**	**29**
10.	**ब्रह्मवाणी का संदेश और आध्यात्मिक आनंद**	**30**

लेखों में प्रकट किए गए विचार लेखकों के व्यक्तिगत विचार हैं। इनके प्रति प्रकाशक/संपादक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र सहारनपुर होगा।

• • •

सदस्यता शुल्क

वार्षिक रु. 200/-

आजीवन (10 वर्ष) रु. 1800/-

प्रकाशन कार्यालय

श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ

नकुड़ रोड, सरसावा 247232, जिला सहारनपुर (उ. प्र.)

फोन : +91 70881 20381

ई-मेल : tartammanjari@gmail.com

किरंतन

राग श्री साखी

मेरे धनी धाम के दुलहा, मैं कर ना सकी पेहेचान ।
सो रोऊं मैं याद कर कर, जो मारे हेत के बान ।।१।।

सोई दरद अब आइया, लग्या कलेजे घाए।
अब ए अचरज होत है, जो मुरदे रहत अरवाहे ।।२।।

अपनायत केती कहूं, जो करी हमसों तुम।
नींद उड़ाई बुलावने, पोहोंचाया कौल हुकम ।।३।।

क्या रोई क्या रोऊंगी, उठी आग इस्क।
थिर चर सारा जलिया, जाए झालां पोहोंची हक ।।४।।

जो साहेब मैं देखिया, सो मिले होए सुख चैन ।
तब लग आतम रोवत, सूके लोहू पानी नैन ।।५।।

जो पट आड़े धाम के, मैं ताए देऊं जार बार।
कोई बिध करके उड़ाइए, ए जो लाग्यो देह विकार ।।६।।

बन बेली सब रोइया, और जंगल जानवर।
कई पसु पंखी केते कहूं, जले जो दरदा कर ।।७।।

जंगल रोया जल बल हुआ खाक।
इनमें पंखी क्यों रहे, जो पर जल हुए पाक ।।८।।

पहाड़ रोए टूटे टुकड़े, हुए हैं भूक भूक।
भवजल रोया सागर, सो गया सारा सूक ।।९।।

भोम रोई भली भांत सों, टूट गई रसातल ।
नाग लोक सब रोइया, सो पड़या जाए पाताल ।।१०।।

रोए पांच तत्व तीन गुन, निरंजन निराकार ।
रोई द्वैत पुरुख प्रकृती, पट उड़यो अंतर आकार ।।११।।

(प्रकरण ७५)

सम्पादकीय

अर्स ल्यो या दुनियां, दोऊ पाइए ना एक ठौर

श्री कुलजम स्वरूप साहेब के 'खुलासा' ग्रंथ में संसार के लोगों को संबोधित करते हुए श्री महामति जी कहते हैं-

अर्स ल्यो या दुनियां, दोऊ पाइए ना एक ठौर।
हक खोया झूठ बदले, सुन्या न महंमद सोर।।(५/२४)

या तो तुम परमधाम का अखण्ड सुख लो या संसार का क्षणिक सुख। दोनों एक साथ नहीं मिल सकते। तुमने तो प्रियतम अक्षरातीत की तारतम वाणी की गूंज नहीं सुनी और संसार के झूठे सुखों की चाहत में अपने प्राणेश्वर से विमुख हो गये। किंतु,

दुनी अपनी दानाई से, लेने चाहे दोए।
फरेब देने चाहे हक को, सो गए प्यारी उमर खोए।।(५/२५)

इस संसार की जीव सृष्टि अपनी चतुराई से दोनों ही सुख लेना चाहती है। ऐसा करके वह एक प्रकार से परब्रह्म को ही धोखा देना चाहती है और इस प्रकार अपने कुत्सित प्रयास में अपनी अति प्यारी उम्र खो देती है।

दरअसल विषय सुखों का दलदल इतना घातक होता है कि एक बार उसमें फंस जाने पर तब तक नहीं निकला जा सकता, जब तक परब्रह्म की कृपा से विवेक दृष्टि उत्पन्न न हो जाय। संसार के लोग यही सोचते हैं कि इतनी उम्र है, इसमें केवल तारतम वाणी के चिन्तन और चितवनि से जीवन का लक्ष्य पूरा नहीं होगा, अपितु संसार का सुख भी लेना चाहिये। जीव सृष्टि ज्ञान और प्रेम का मार्ग तो अपना नहीं पाती, वह केवल कर्मकाण्ड का आश्रय लेकर चलती रहती है। परिणामतः उसकी तृष्णा से निवृत्ति नहीं हो पाती और प्रियतम का सुख भी खो देती है। जब तक वह सावचेत होती है, तब तक बुढ़ापा आ चुका होता है।

इसके विपरीत जो व्यक्ति तारतम ज्ञान का प्रकाश पाकर थोड़ी देर के लिये भी युगल स्वरूप की मोहिनी छवि का ध्यान करता है और यह प्रार्थना करता है कि हे मेरे प्राणेश्वर! मुझे विषय जाल से बचाये रखना, परब्रह्म की कृपा-रुपी छत्रछाया ऐसे व्यक्ति का हर पल संरक्षण करती है। यदि वह बुरे संस्कारों के कारण विषय-सुखों में फंसना भी चाहता है तो अंतःप्रेरणा उसे रोक देती है। इसलिये आत्मिक सुख के इच्छुक प्रत्येक व्यक्ति को समय रहते युगल-स्वरूप की प्रेममयी चितवनि का आश्रय अवश्य लेना चाहिये।

- कृष्ण कुमार कालड़ा

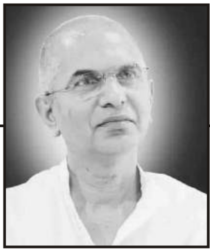

राजन स्वामी, सरसावा

भ्रांतिनाशनम् प्रश्नमाला 4

प्रश्न ६ः आप किस आधार पर ऐसा मानते हैं कि एकमात्र मुहम्मद साहब ने ही परब्रह्म का साक्षात्कार किया है। मनु से उत्पन्न होने वाले हिन्दू तो मात्र जड़ मूर्तियों की ही पूजा करते रह गये। आपका यह कथन आपके द्वारा की गयी टीका खुलासा पृष्ठ ५७/१६६ पर दृष्टिगोचर होता है।

उत्तर : आप अपने असंगत एवं सारहीन प्रश्नों के द्वारा यही दर्शाना चाहते हैं कि एकमात्र आप ही हिन्दू धर्म के शुभचिन्तक हैं। जबकि वास्तविकता यह है कि आपको हिन्दू (वैदिक) धर्म की विशालता, व्यापकता एवं गरिमा का आभास ही नहीं है।

संसार के सभी मत पन्थों का इतिहास २५,००० वर्ष से पुराना नहीं है। इस्लाम मत जहां १,५०० वर्ष पुराना है तो ईसाई मत २,००० वर्ष। यहूदी तथा पारसी मत भी २५,००० वर्ष से अधिक पुराने नहीं हैं जबकि सृष्टि संवत् तो १ अरब ६६ करोड़ ८ लाख ५३ हजार १२४ है अर्थात् इस पृथ्वी लोक पर वर्तमान मानवीय सृष्टि का अस्तित्व इतने वर्षो से है। अब प्रश्न यह है कि इतने वर्षों पूर्व इस पृथ्वी पर किस धर्म (मत) का अस्तित्व था? इसका स्पष्टीकरण वेद के इन कथनों से विदित होता है-

तस्मात् यज्ञात् सर्व हुतः ऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दांसि ह जनुः तस्मात् यजुः तस्मादजायत।।(ऋ. १०/६०/६)

सूर्य चन्द्रमसौ धाता यथापूर्वम् अकल्पयत।
दिवं च पृथ्वीं च अन्तरिक्षमथो स्वः।।(ऋ. १०/१६०/३)

शाश्वतीभ्यः समाभ्यः।।(यजु. ४०/८)

अर्थात् उस परमात्मा ने सृष्टि के प्रारम्भ में चार ऋषियों के हृदय में चारों वेदों ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद का ज्ञान प्रकट किया। ऐसा ही वह प्रत्येक कल्प में करता है। वर्तमान कल्प में जिस प्रकार सूर्य, चन्द्रमा, पृथ्वी, अन्तरिक्ष तथा द्युलोक आदि का अस्तित्व है, वैसे ही पूर्व कल्पों में था तथा भविष्य में भी ऐसा ही रहेगा। इसी प्रकार वेद का ज्ञान भी प्रत्येक कल्प में एक समान ही रहता है। इस प्रकार अनादि ब्रह्म का अनादि ज्ञान भी प्रवाह रूप से प्रत्येक

सृष्टि के प्रारम्भ में प्रकट होता है और महाप्रलय तक बना रहता है। अतः इसे अपौरूषेय एंव सनातन कहते हैं। “अपौरुषेयत्वं हि वेदानां तत्कर्तुः पुरुषस्य अभावात्” सांख्य दर्शन (५/४६) का कथन इसी सन्दर्भ में है। इसके विपरीत कतेब पक्ष का ज्ञान भिन्न-भिन्न समय पर भिन्न भिन्न पैगम्बरों द्वारा उस समय की स्थिति के अनुसार दिया गया है। यदि निष्पक्ष समीक्षा की जाय तो वैदिक संस्कृत की प्राचीनतम भाषा है। प्राचीन काल में वर्तमान समय की तरह संचार के आधुनिक संसाधनों एवं तकनीकी सुविधाओं का अभाव था, अतः ज्ञान के प्रसार में थोड़ा सा भी आलस्य प्रमाद होने पर भाषायी विकृति हुई एवं दार्शनिक तथ्यों को तोड़ मरोड़ कर प्रस्तुत किया गया। जिस समय सम्पूर्ण यूरोप एवं मध्य एशिया असभ्य जीवन जी रहा था, उस समय भारतवर्ष में विश्वविद्यालयों की संस्कृति अपनी सुगन्धि फैला रही थी। भारत के बाहर ज्ञान के प्रसार में अकर्मण्यता के कारण वैदिक धर्म विकृत होकर पारसी मत में परिवर्तित हो गया। इसी का विकृत रुप यहूदी धर्म हुआ जिसमें से ईसाई एवं इस्लाम मत का उदय हुआ। भारत में भी इसी वैदिक धर्म से जैन तथा बौद्ध मत एवं सिख पन्थ का पादुर्भाव हुआ।

इसके पूर्व त्रेता आदि युगों में सम्पूर्ण विश्व में एकमात्र भारतीय संस्कृति का ही वर्चस्व था, जिसकी साक्षी अरब, यूरोप, अमेरिका तथा रुस आदि में मिलने वाले अवशेषों से मिला करती है। समाज में एक कहावत कही जाती है कि श्मुल्ला की दौड़ मस्जिदश तक ही होती है। मुझे तो ऐसा प्रतीत होता है कि पौराणिक संकुचितता की आंधी में आपकी विवेक शक्ति इतनी कुण्ठित हो गयी है कि वह वैदिक ज्ञान की विराट दृष्टि के अनुसार स्वयं को ढालने में असमर्थ है। वेद के शान्तिपाठ में देखिये क्या लिखा है-

द्यौ शान्तिः अन्तरिक्षम् शान्तिः पृथवी शान्तिः आपः शान्ति....
सर्वम् शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।

जो वेद सम्पूर्ण सृष्टि के द्युलोक एवं अनन्त आकाश में शान्ति की कामना करता है उसे मात्र हिन्दू समाज तक सीमित कर देना उसकी अनुपम गरिमा को कम करना है। वेद का ज्ञान सार्वभौमिक एवं सार्वकालिक है। वेद में हिन्दू मुस्लिम, क्रिश्चियन आदि की कोई भावना नहीं है अपितु मानवमात्र के लिये ज्ञान दिया गया है। श्री प्राणनाथ जी की तारतम वाणी भी सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के लिये है। उसे किसी सम्प्रदाय विशेष से जोड़कर नहीं देखा जा सकता। आप पौराणिक संस्कारों में पले बढ़े हैं अतः सम्पूर्ण विश्व को वेद एवं तारतम वाणी के प्रकाश में लाकर एक आंगन का निवासी मानने के सम्बन्ध में सोचना भी आपके लिये एक दिवा स्वप्न है।

एक कल्प में ४ अरब ३२ करोड़ वर्ष होते हैं। प्रत्येक कल्प में १४ मनु एवं १४ इन्द्र होते हैं। पहले मन्वन्तर में स्वायम्भुव मनु थे तथा उनकी पत्नी का नाम शतरूपा था। वर्तमान आठवें मन्वन्तर में वैवस्वत् मनु की सृष्टि है। उनकी पत्नी का नाम श्रद्धा था। मनु की सन्तान मानव है। इसके अन्तर्गत हिन्दू, मुस्लिम, क्रिश्चियन, यहुदी और पारसी आदि सभी आते हैं। इस सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी के लिये कृपया श्री रघुनन्दन शर्मा द्वारा लिखित ‘वैदिक सम्पत्ति’ नामक ग्रन्थ का अवलोकन करने का कष्ट करें। वेद एवं स्वसं वेद (तारतम वाणी) सम्पूर्ण मानव जाति के लिये है। आप उन्हें पौराणिक मान्यताओं द्वारा पोषित मात्र हिन्दू समाज तक सीमित नहीं कर सकते।

जब तारतम वाणी भारतवर्ष को स्वर्ग, वैकुण्ठ से भी श्रेष्ठ मानती है तथा हिन्दू (वैदिक, धर्म) को सभी धर्मों (मतों) से सर्वोपरि घोषित करती है तो आप इस प्रकार का मिथ्या आरोप क्यों लगाते हैं? देखिये तारतम वाणी हिन्दू धर्म और

उसके अनुयायियों के सम्बन्ध में क्या कहती है, ये कथन तारतम वाणी के उस कयामतनामा ग्रन्थ से है जिसे आप कुरान से सम्बन्धित मानते हैं-

सब पैगंमर जहूद खिल के विचार देखो दीदे दिल के।
ओ तो आए हिंदुओं दरम्यान, जिनको तुम केहेते कुफरान।।

तुम ढूँढो अपने खिलके माहें, तामें तो साहेब आया नाहें।
जिनको तुम केहेते काफर जात, सो सबकी करसी सिफात।।

गरीबों पर मेहेरबान। रब ना रखे किसी का गुमान,
ओ तो परदा लिख्या जो हजरत के रूए पर, तिनकी क्या तुमको नहीं खबर।।

परदा लिख्या वास्ते आवने हिंदुओं माहे, ए पढ़े इसारत समझत नाहें।
जो देखत हैं जेर जबर, सो हकीकत पावें क्यों कर।।

ऐसी हिन्दुओं की कही सिफत, आखिर हिन्दुओं में मुलक नबुवत।
और आप हजरत रिसालत पनाह, जहूद फकीरों में पातसाह।।

पाचमें सिपारे में एह बयान, न मानो सो जाए देखो कुरान।
और हिंदवी किताबोंमें यों कही, बुध कलंकी आवेगा सही।।

सो आएके करसी एक रस, मसरक मगरब होसी बस।
कोई केहेसी क्या दोऊ होसी एक बेर, तिनका भी कर देंऊं निबेर।।

ए इसारत खोले निज बुध, बिना हादी ना पाइए सुध।
घोड़े को लिख्या कलंकी कर, ताकी किनकों नहीं खबर।।

जोतिष कहे विजया अभिनंद, सब कलिजुग को करसी निकंद।
अंजील कहे ईसा बुजरक, सो आए के करसी हक।।

(बड़ा कयामतनामा १/२०-२)

उपरोक्त चौपाईयों का आशय यह है कि हे मुसलमानों! जिन हिन्दुओं को तुम काफिर कहते हो, उन्हीं में सच्चिदानन्द परब्रह्म (अल्लाह तआला) की आवेश शक्ति का प्रकटन होना है जिसे तुम इमाम महदी कहते हो और हिन्दू श्री विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक अवतार कहते हैं। जब वे आयेंगे तो हिन्दू मुस्लिम दोनों की भ्रान्तियों का समाधान करके सबको एक परब्रह्म की पहचान करवायेंगे। यद्यपि पौराणिक मान्यता में मनु से मानव जाति की उत्पत्ति मानी जाती है और कतेब पक्ष में आदम से। आदम से आदमी (मानव) की उत्पत्ति मानने का सिद्धान्त एक ही है। केवल भाषा भेद है। जब समस्त सृष्टि का परमात्मा एक है तो मनु या आदम भी एक क्यों नहीं है? वैदिक मान्यता के अनुसार सर्वप्रथम संकल्पित सृष्टि उत्पन्न हुई। 'ततो मनुष्याः ऋषयश्च अजायन्त' का यह कथन यही दर्शाता है अर्थात् आदि नारायण के संकल्प से मानसरोवर क्षेत्र में अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा आदि ऋषियों की उत्पत्ति हुई जिनमें चारों वेदों के ज्ञान का प्रकटन हुआ। इनके साथ ही ब्रह्मा, विष्णु, शिव आदि देवगण भी उत्पन्न हुए। ब्रह्मा जी का पुत्र विराट हुआ जिनका

पुत्र मनु हुआ। मनु से इक्ष्वाकु की उत्पत्ति हुई। यहां से मानवीय सृष्टि अवश्य मानी जाती है किन्तु अग्नि, वायु, आदित्य एवं ब्रह्मा आदि महर्षि भी मानव योनि के अन्तर्गत ही हैं भले ही अपने दिव्य गुणों के कारण उन्हें सामान्य मानवों से अलग माना जाता हो। श्रद्धा के अतिरेक में इन महापुरुषों को सामान्यतः मानव योनि में नहीं गिना जाता है किन्तु सैद्धान्तिक रुप में ये भी मानव ही कहे जायेंगे क्योंकि ब्रह्म के अतिरिक्त सभी जीव हैं। मनुष्य अपने ज्ञान एवं योग बल से उन्नति करता हुआ देवत्व, ऋषित्व, महर्षित्व एवं ब्रह्मर्षित्व पद को प्राप्त होता है। सृष्टि के प्रारम्भ में आदि नारायण के संकल्प से प्रकट होने वाले इन चारों ऋषियों अग्नि, वायु, आदित्य एवं अंगिरा का पद सर्वोपरि है। अतः इन्हें श्रद्धावश मानव जाति से परे गिना जाता है।

इस प्रकार वैदिक मान्यता में मनु से सृष्टि उत्पन्न होने की बात आलंकारिक है। वैदिक ऋचाएं मनु को एक व्यक्ति विशेष न मानकर जीव मानती है तथा शतरूपा को प्रकृति । 'शतरूपाणि यस्याः सा शतरूपा' जिसके सैकड़ों रूप हैं, वह शतरूपा है।

ब्रह्म क्षत्रादयस्तमान्यनोर्जातास्तु मानवाः ।
ब्राह्मणामानवास्तेषां सांग वेदमधारयन् ।।(म. आ. ७५/५)

कथन इसी सन्दर्भ में माना जाता है। ब्रह्म के निर्देशन में जीव तथा प्रकृति के योग से सृष्टि का विस्तार हुआ है जिसे पौराणिक साहित्य में मनु एवं शतरूपा के नाम से दर्शाया गया है। किन्तु वर्तमान समय में इस्लामिक जगत के विद्वानों ने एक पक्षपात पूर्ण विचारधारा को जन्म दिया है। उनके अनुसार सृष्टि में सर्वप्रथम आदम अलैहि इस्लाम का जन्म हुआ। वे हिमालय से चलकर सम्पूर्ण भारत को पार करते हुए लंका आये। भारत से लंका जाने के लिये उन्होंने जो पुल बनाया उसे आदम पुल कहते हैं। श्री लंका से वे अरब पहुंचे और उन्होंने वहाँ आदमियों (मानवों) की सृष्टि की। उनकी पत्नी का नाम हव्वा था। समस्त संसार के लोग इन्हीं से उत्पन्न हुए हैं। वे इस्लाम धर्म के प्रवर्तक थे। मुहम्मद साहब तो इस्लाम में संशोधन करने वाले पैगम्बर हैं। यह विचारधारा इस्लाम मत को सर्वोपरि सिद्ध करने की मानसिकता से जुड़ी हुई है। निष्पक्ष समीक्षा करने पर इसके सम्बन्ध में कई प्रश्न खड़े होते हैं-

१. यदि आदम को हिमालय से सीधे अरब ही जाना था तो उन्हें पैदल चलकर श्रीलंका तक का सफर करने की क्या आवश्यकता थी? वे सीधे ही हिमालय से उतरकर राजस्थान, गुजरात होते हुए अरब क्यों नहीं चले गये?

२. भारतवर्ष के हरे-भरे भू-भाग को छोड़कर अरब के तपते मरूस्थल में उन्हें जाने की आवश्यकता क्यों पड़ी? क्या फल-फूल से लदी हुई भारतवर्ष की धरती सृष्टि के लिये उपयुक्त नहीं थी?

३. वाल्मीकीय रामायण में तो यह लिखा है कि मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम ने अपनी वानर सेना की सहायता से समुद्र पर पुल बनाया था किन्तु आदम ने पत्थरों का पुल कैसे बनवाया? क्या चमत्कार से अपने आप बन गया या उन्होंने स्वयं पत्थरों को एकत्रित कर पुल का निर्माण किया? ऐसा करने में उन्हें कितना समय लगा? एक अकेले व्यक्ति के जाने के लिये पुल के निर्माण की क्या आवश्यकता थी?

४. लंका से अरब तक की यात्रा उन्होंने कैसे की नौका से या तैर कर अथवा आकाश में उड़कर?

५. यदि अल्लाह तआला को अरब में ही सृष्टि करवानी थी तो आदम को हिमालय पर प्रकट करने की आवश्यकता क्या थी? अल्लाह की इस भूल से आदम को हिमालय से अरब जाने में कितने कष्ट का सामना करना समस्त

संसार के विद्वान जब धरती के सबसे ऊँचे भाग तिब्बत -मानसरोवर में सर्वप्रथम सृष्टि का अस्तित्व मानते हैं तो मुस्लिम विद्वानों को भी विवश होकर यह तो मानना पड़ा किन्तु पक्षपात एवं हठधर्मिता से उन्होंने आदम को अरब चले जाने की मिथ्या कहानी गढ़ ली। इसके साथ ही उन्हें मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम द्वारा सेतुबंध बनाये जाने का गौरव भी छीनना था। अतः इस प्रकार की काल्पनिक कहानी गढ़ लेना उनकी विवशता थी।

६. यदि इस्लाम धर्म सृष्टि के प्रारम्भ से ही चल रहा है तो वे यहूदियों, ईसाईयों एवं हिन्दुओं को काफिर क्यों कहते हैं? उनके धर्मग्रन्थों को जलाते क्यों है? यदि वे कहते हैं कि वैदिक ऋचाओं की तरह ही तौरेत, इन्जील तथा जंबूर (ओल्ड टेस्टामेंट) के कथन है तो प्रश्न यह होता है कि ओल्ड टेस्टामेंट के अलग-अलग पैगम्बर अलग अलग समय में अलग-अलग स्थानों पर उत्पन्न हुए हैं। उनके कथनों में विरोधाभास है। ओल्ड टेस्टामेंट में जिन ऐतिहासिक घटनाक्रमों का वर्णन है, उनका संकलन किसने किया?

वैदिक का तो चारों ऋषियों के हृदय में एक साथ ही आत्मज्ञान के द्वारा समाधि अवस्था में हो गया था। उनमें केवल शाश्वत सत्य ज्ञान की बातें हैं। कोई भी ऐतिहासिक तथ्य नहीं है। अतः वैदिक ज्ञान की बाईबल से तुलना करने का कोई प्रश्न ही नहीं है। ७२ माजजे (महंमद की बीतक) में वर्णित है कि आदम सरनदीप (श्रीलंका) नामक एक द्वीप में अवतरित हुए थे तथा हव्वा सिन्ध में। इस प्रकार आदम का हिमालय में अवतरित होने का कतेब पक्ष में कोई प्रमाण नहीं है। इसे आलंकारिक रूप में मनु मानकर अवश्य वर्णित किया जा सकता है।

कर्मकाण्ड (शरीयत) के माध्यम से परब्रह्म का साक्षात्कार नहीं हो सकता। उपासना (तरीकत) के द्वारा भी वैकुण्ठ निराकार से परे की प्राप्ति नहीं हो सकती। 'उपासनी निरगुन या निरंजन, किन उलंघ्यो न जाय विष्णु को कारन' प्र.हि. (३४/१०) का कथन इसी सन्दर्भ में है। सृष्टि के प्राचीनतम ग्रन्थ वेद के अनुसार मात्र परम गुहा (एकादश द्वार) में ही ब्रह्म का साक्षात्कार होता है-

वेनस्तत् पश्यति निहितं गुहायाम्।(यजुर्वेद ३२/८)

किन्तु उस साक्षात्कार में मात्र योगमाया की चतुष्पाद विभूति का ही साक्षात्कार होता है-

त्रीणी पदानि निहिता गुहायास्य यस्तानिवेद स पितुः पितासत् ।(अथर्ववेद २/१/२)

अर्थात् परम गुहा में अपनी शुद्ध चैतन्य दृष्टि से प्रवेश करने पर अक्षर ब्रह्म के त्रिपाद अमृत (अव्याकृत, सबलिक, केवल अथवा सबलिक, केवल और सत्स्वरुप) का ही साक्षात्कार होता है अक्षर ब्रह्म की पंच-वासनाओं सनकादिक (सनन्दन्, सनातन तथा सन्तकुमार) कबीर, विष्णु भगवान, शुकदेव तथा शंकर जी ने ध्यान द्वारा परम गुहा में प्रविष्ट होकर आदि नारायण तथा निराकार मण्डल को पार करके चतुष्पाद विभूति का साक्षात्कार किया था। इस सम्बन्ध में प्रकास हिंदुस्तानी(३४/११) में कहा गया है-

यद्यपि चेश्वराः। निद्रा संवलितस्तस्याभास एव हि केवलम् ।।(पु. सं० १२/६०)

मोह निद्रा में शयन करने वाले उस परमात्मा (अव्याकृत ब्रह्म) को आप कैसे देख सकते हैं क्योंकि आप सभी उसके स्वाप्निक स्वरूप के प्रतिबिम्ब मात्र हैं। जब सृष्टि के आधार कहे जाने वाले इन पंच देवों की यह स्थिति है तो भला अन्य योगी, महात्मा एवं पीर, फकीर निराकार मण्डल को कैसे पार कर सकते है? क्या सृष्टि में इनसे भी बड़ा

कोई योगी हुआ है? देवगणों के द्वारा प्रार्थना किये जाने पर रोधिनी शक्ति कहती है कि-

अतः निवारयितुमहं स्थिता जीवेश्वरादिकं ।
मर्यादयं च महती न मामत्येतिकश्चन ।।(पु. सं. १२/६३)

अतः जीवों एवं ईश्वर आदि को रोकने के लिये मैं यहां स्थित हूँ। मेरी यही महान मर्यादा है कि कोई भी मुझे पार नहीं कर पाता है। उपरोक्त कथन से यह स्पष्ट होता है कि पंचवासनाओं के अतिरिक्त इस सृष्टि में अन्य कोई भी निराकार को पार कर योगमाया के ब्रह्माण्ड (बेहद) में नहीं जा सका है। कतेब पक्ष में भी मात्र बयाजीद वस्तामी ऐसे सूफी फकीर हुए हैं जिन्होंने मोह सागर में विराजमान आदि नारायण का साक्षात्कार किया है।

'पंचस्वन्तः पुरूषऽआविवेशतान्यन्तः पुरुषेअर्पितानि' (यजु. १२/४२) अर्थात् पांच स्वरुपों में परब्रह्म हैं और परब्रह्म में पांच स्वरूप विराजमान हैं। बीतक साहेब (५५/३२) के मंगलाचरण में इस रहस्य को स्पष्ट किया गया है-

लखमी जी और भगवान जी, ए दोनों एकै अंग।
ए हैं अंग श्री राज के, ए पांचों अद्वैत एक संग।।

उपरोक्त विवेचना यही दर्शाती है कि स्वलीला अद्वैत परमधाम में सत् अंग अक्षर ब्रह्म, चिदघन स्वरूप श्री राजजी आनन्द अंग श्यामा जी, सखियाँ एवं महालक्ष्मी (अक्षर ब्रह्म की अर्धांगिनी)। एक ही स्वरूप हैं और इनके मिलने पर ही सच्चिदानन्द परब्रह्म का पूर्ण स्वरूप माना जाता है। यह तो सर्वविदित है कि-

मूल सुरत अछर की जेह, जिन चाहया देखों प्रेम सनेह।
सो सुरत धनी को ले आवेस, नंद घर कियो प्रवेस।।(प्र. हि. ३७/२६)

अर्थात् श्रीकृष्ण जी के तन में अक्षर ब्रह्म की आत्मा परब्रह्म के जोश एवं आवेश के साथ थी। वही आत्मा अरब में मुहम्मद मुस्तफा के तन में विराजमान होती है-

रास लीला खेल के, आए बरारब स्याम।
भैंसठ बरस तहां रहे, वायदा किया इस ठाम।।(बी. सा. ७१/८४)

स्वलीला अद्वैत अक्षरातीत का अंग होने के कारण मात्र अक्षर ब्रह्म की आत्मा, श्यामा जी की आत्मा एवं अन्य ब्रह्मात्माओं को ही यह अधिकार है कि जब वे इस संसार में जब अपनी सूरता से आयी हैं तो सत्स्वरुप को पार कर परमधाम एवं युगल स्वरूप का साक्षात्कार कर सकती हैं। परब्रह्म के जिस जोश (जिब्रील) के द्वारा शुकदेव जी महारास का वर्णन करते हैं, कबीर जी अपने बीजक ग्रन्थ के गूढ़ रहस्यों को स्पष्ट करते हैं। शिव जी उमा को परमधाम का वर्णन सुनाते हैं तथा योगेश्वर श्रीकृष्ण गीता का अद्भुत ज्ञान देते हैं वह (जिब्रील) स्वयं मेयराज के समय परमधाम में प्रवेश नहीं कर सका-

जेते पैगंमर भए, जिनों पोहोंचाया हक पैगाम।
पाई जबराईल से बुजरकी, जो पोहोंच्या नूर मुकाम।।(छो. क. २/१)

जित चल न सक्या जबराईल, कहे मेरे पर जलत।
नूर तजल्ला की तजल्ली, ए जोत सेहे ना सकता।।(खुलासा ६/१४)

अक्षर ब्रह्म की जाग्रत बुद्धि अस्राफील भी मात्र चांदनी चौक तक ही जा सकी। ऐसी स्थिति में यही कहना पड़ेगा कि सत्स्वरुप में निरन्तर विद्यमान रहने वाली अक्षर ब्रह्म की दोनों शक्तियों (क्रिया शक्ति जिब्रील तथा ज्ञान शक्ति अस्राफील) को भी जब परमधाम के रंग महल में प्रवेश का अधिकार नहीं मिला तो ईश्वरी सृष्टि को कैसे मिल सकता है? पुनः इस लक्ष्य तक तो संसार के जीव (अवतार, तीर्थंकर, पैगम्बर, योगी, यति) पहुंच ही नहीं सकते। यदि मुस्तफा के तन में अक्षर की आत्मा नहीं होती तो उन्हें भी परब्रह्म के साक्षात्कार (मेयराज) का अवसर कदापि नहीं प्राप्त हो सकता था। इस सत्य को जानने के लिये आपको हिन्दू-मुस्लिम का चश्मा उतारना पड़ेगा। निःसंदेह मुसलमानों ने अपने मजहब को फैलाने के लिये मानव समाज पर असहनीय अत्याचार किया है किन्तु उसका मुहम्मद साहब के द्वारा परब्रह्म के साक्षात्कार से क्या सम्बन्ध ? इस सम्बन्ध में 'सनन्ध' ग्रन्थ का यह कथन बहुत ही महत्वपूर्ण है-

हुकम लेकर आइया, तब नाम धराया गैन।
हुकम बजाय पिछा फिरया, तब सोई ऐन का ऐन।।

अर्थात् मुहम्मद साहब के अन्दर अक्षर की आत्मा थी जो परब्रह्म के आदेश से अरब में अवतरित हुई थी ताकि कुरान द्वारा सारे संसार को यह सन्देश दिया जा सके कि कयामत (ग्यारहवीं सदी) के समय स्वयं परब्रह्म इमाम महदी (विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक) स्वरूप में प्रकट होने वाले हैं। अक्षर की आत्मा स्वलीला अद्वैत परब्रह्म की अंगरूपा है, अतः अरब में आकर वह परब्रह्म का साक्षात्कार करती है तथा संसार को अपना सन्देश देकर पुनः अपने मूल स्वरूप को प्राप्त हो जाती है। आप यदि तारतम वाणी पर विश्वास नहीं करते हैं तो सिक्खों की गुरुवाणी को तो मैंने नहीं बनाया है, कृपया उसका कथन देखिये-

पारजातु गोपी ले आइया, वृन्दावन माहे रंग किया।
ले नीले कपड़े बस्तर पहने, तुर्क पठानी अमल किया।।

अर्थात् जिसने वृन्दावन में रास लीला की वह अरब में कुरान लेकर अवतरित हुआ। यह सत्य है कि कट्टरपन्थी वहाबी विचारधारा के अनुयायियों ने कुरान के अर्थों में इतनी विकृति की है कि अली के बाद इस्लाम का वास्तविक स्वरूप समाप्त हो गया है। उनके धर्म के नाम पर होने वाले अत्याचारों से सारा संसार त्रस्त रहा है। सम्भवतः इसी कारण आपको यह विश्वास नहीं हो पा रहा है कि मुहम्मद साहब ने अक्षरातीत का साक्षात्कार भी किया था। परम सत्य को जानने के लिये जाति, सम्प्रदाय, प्रान्त आदि की दृष्टि से परे होकर देखना चाहिये। अक्षर ब्रह्म की पंच-वासनायें तो हिन्दू तनों में ही अवतरित हुई थी। आपको यह भी जानना चाहिये महाभारत के युद्ध तथा प्रभास क्षेत्र में यादवों के संहार के पश्चात् कुछ लोग अरब की धरती पर चले गये थे जिन्होंने वहां पर अपनी सभ्यता का विकास किया था। वे स्वंय को सैय्यद (ब्राह्मण) कहते थे। मुहम्मद साहब कुरेश घराने के थे, जो अरब की दृष्टि से ब्राह्मण वर्ग में आता है।

इस प्रकार, यदि हम सूक्ष्म दृष्टि से देखें तो मानव सृष्टि का जो उद्गम मानसरोवर में हुआ था, वहीं से वह संसार में चारों ओर (यूरोप, अरब, मध्य एशिया, अमेरिका आदि) फैला। कहने का आशय यह है कि प्रारम्भ में सभी वैदिक धर्मावलम्बी आर्य (हिन्दू) ही थे किन्तु समय के प्रवाह में सभ्यता एवं संस्कृति का ह्रास होता गया जिससे शक, हूण, कुषाण, मंगोल आदि लूट-मार करने वाली जातियों तथा पारसी, यहूदी, ईसाई एवं इस्लाम मत का उदय हुआ और वैदिक धर्म भी विकृत स्वरूप में पौराणिकता की चादर ओढ़ कर हिन्दू (सनातन) धर्म कहलाने लगा।

डॉ. प्रवीण बत्रा, लंदन, यू.के.

अब तुम निकसो नींद से

धामधनी अक्षरातीत ने हम सब की आत्म-जागृति के लिए तारतम वाणी कही है। इसके ५२७ प्रकरणों और १८,७६८ चौपाइयों का केवल एक ही उद्देश्य है परमधाम की आत्माओं की आत्म-जागृति। कहीं पर प्रेम भरे शब्दों में धनी ने हमें पुकार लगाई है, कहीं पर टीस भरे तीखे व्यंग भी कसे हैं, कहीं पर कटु शब्दों का प्रयोग भी हुआ है, और कहीं तीखी आलोचनाएं भी की गई हैं। इसी प्रकार, कहीं पर परमधाम के सुखों की याद दिलाकर हमें पुकारा है तो कहीं इस संसार के सुखों की नश्वरता और क्षणभंगुरता पर प्रकाश डालकर उन्हें छोड़ने के लिए प्रेरित किया है। एक तरफ ज्ञान अध्यात्म के शिखर को पहुंचता है और वेद व कतेब के सबसे गहरे रहस्यों को उजागर किया, उनका एकीकरण किया और एक दूसरा पहलू यह भी था कि बिल्कुल सीधे सरल स्पष्ट शब्दों के अंदर प्रेम की सुंदर व्याख्या भी की है। कहीं पर एक विरहन के हृदय की पुकार है जिन प्रकरणों को पढ़कर हृदय को चोट पहुंचती है और कहीं पर लैला-मजनूँ, ससी-पुन्नू, मछली-पतंगा जैसे सैकड़ों उदाहरण देकर के परमधाम की ब्रह्मसृष्टि को प्रेम की राह पर चलने के लिए प्रेरित किया है। 'खुलासा' ग्रंथ की निम्न चौपाई में एक बार फिर से धामधनी हमें चेता रहे हैं कि अपने आप को ब्रह्मसृष्टि, मोमिन और रूह के नाम से संबोधित करने वाले हम सुंदरसाथ परमधाम की राह पर कितना चल रहे हैं। श्री महामति जी के धाम हृदय में विराजमान होकर धामधनी कह रहे हैं कि तुम एक बार अपने प्रियतम के प्यार की तरफ देखो-

अब तुम निकसो नींद से, आए पोहोंची सरत।
कौल किया था हक ने, सो आई कयामत।।(खुलासा १८/१)

इसी प्रकार, 'किरन्तन' ग्रंथ में एक चौपाई आती है-

करनी तुमारी मेरी मैं तौली, जैसे सत असत।
हो धनी मेरे, एती है तफावत।।

यहां श्री इंद्रावती जी कहती हैं कि हे धामधनी! जब मैं एक तरफ अपनी करनी और रहनी की और दूसरी तरफ आपकी मेहर की तुलना करतीं हूं तो मैं क्या पाती हूं मानों एक तरफ तो असत्य है और दूसरी तरफ सत्य। श्री इंद्रावती जी की आत्मा पुकारती है कि मेरा हृदय उस वीरान मरुस्थल की तरह है जहां दूर-दूर तक कामनाओं और वासनाओं

के रेतीले पहाड़ है लेकिन जिसमें प्रेम- रूपी कोई भी पुष्प नहीं खिलता। लेकिन धामधनी जल के भरे हुए उस बादल की तरह है जो निरंतर मुझ पर बरस रहा है- "बाले थें बुड़ापन लग, मेरे सिर पर खड़े सुभान।" एक समय था जब वे अपने सद्गुरु के लिए कहा करती थी-

बादल रूह-अल्लाह का, बरस्या वतनी नूर।
अर्स बका का नासूत में, हुआ सब जहूर।।

रूह-अल्लाह क्या है, यह मेहर का बादल है और उस बादल से वतन का नूर बरस रहा है। सामान्य रूप से, जब वर्षा होती है तो जंगल के प्रत्येक पेड़ का प्रत्येक पत्ता उसमें डूब जाता है, भीग जाता है। श्री इंद्रावती जी कहती हैं-

मेघ की बूंदे जेती परे, ना कोई वनस्पति निरमान करे।
जदपि याको निरमान होए, पर गुन धनी के ना गिने कोए।।

अर्थात् वर्षा ऋतु में वृक्षों पर जो बूंदे पड़ती हैं तो कोई पत्ता उन बूंदों को गिनता नहीं है। क्या कोई वृक्ष गिनता है कि मेरे ऊपर कितनी वर्षा की बूंदे गिरीं, वह बस उसमें भीगता है। श्री इंद्रावती जी कहती है कि यह तो शायद हो सकता है कि उन सभी बूंदों को गिना जा सके, लेकिन धामधनी जो मेहर-रूपी वर्षा हम पर कर रहे हैं उसकी कोई भी गिनती नहीं कर सकता। यद्यपि माया की नींद सबको परेशान करती है लेकिन धामधनी का हुक्म हमें प्रेरित करता है कि आखिर कब तक हम माया की नींद में सोते रहोगे, उम्र यूं ही हाथ से निकलती जा रही है। एक महान विचारक ने कहा है कि भाग्यशाली है वे लोग जिनके हृदय में शब्द-रूपी बाण चोट करते हैं। तभी तो कहा है-

कहा भयो जो मुख थें कहयो, जब लग चोट न निकसी फूट।
प्रेम बान तो ऐसे लगत हैं, अंग होत हैं टूक टूक।।

यह सब धामधनी की मेहर है जो पल-पल हम पर बरस रही है। श्री इंद्रावती जी भी यही कह रही हैं कि तुम देखो खसम प्यार। हमनें संसार में अनेक रिश्ते-नाते बनाए हैं, लेकिन ये सभी स्वार्थ के धरातल पर चल रहे हैं। कहने का भाव यह है कि हम जिसे सबसे ज्यादा प्रेम करते हैं वह किसी और से प्रेम करता है, वह जिससे प्रेम करता है वह किसी और से प्रेम करता है। अगर इस संसार में किसी से प्रेम किया जा सकता है, जो निस्वार्थ हो, निष्काम हो,जहां कोई कामना ना हो तो वह केवल और केवल परमात्मा से किया जा सकता है। अब हमारे सामने प्रश्न उठता है कि धामधनी ने हम पर जो मेहर की है हम उसको कितना अंगीकार कर पा रहे हैं? भले ही आज हम चारसौवीं वर्षगांठ मना रहे है लेकिन इसके बाद भी हमारा जीव इस संसार में है तो यह इस बात का प्रमाण है कि हमनें धनी से प्रेम नहीं किया है। इतने सालों से मेहर हम पर बरस रही है लेकिन हमनें उसकी पहचान नहीं की है और यदि यह समय भी हमारे हाथ से निकल गया तो फिर से एक बार दोबारा चाक का पहिया घूमेगा और फिर इन्हीं परिस्थितियों में आना पड़ेगा।

आज श्री राज जी की मेहर से हमें वाणी सुनने को मिल रही है, उसका चिंतन-मनन कर रहे हैं, भविष्य में न जाने कैसी परिस्थिति हो। चाहे कोई भी प्रकरण हो, या चौपाई हो, सबका एक ही सार है - अपनी आत्मा की जागृति। "तुम देखो खसम प्यार" अर्थात् संसार के रिश्ते-नातों से ऊपर उठकर एक बार धामधनी की तरफ देखो, एक बार उनके प्रेम की तरफ देखो- "ईसा महंमद अन्दर आए के, खोल दिए सब द्वार।" सामान्यतः हम सब जानते हैं कि इस संसार के अंदर तीन ब्रह्मांड बनाए गए, एक ब्रज, दूसरा रास और तीसरा जागनी का ब्रह्मांड-

ब्रह्मसृष्ट हुती बृज रास में, प्रेम हुतो लछ बिन।
सो लछ अव्वल को ल्याय रूह अल्ला, पर न था आखिरी इलम पूरन।।

ब्रज और रास में पहचान नहीं है, प्रेम तो है, लेकिन प्रेम किससे किया जा रहा है, उस स्वरूप की पहचान नहीं है। लेकिन रूह-अल्लाह वह लक्ष्य ले आए पर न था आखरी इलम पूर्ण और वह आखिरी का इल्म किससे आया हकी सूरत के द्वारा। अगर हम ज्ञान की लीला या इल्म की बात करें, तो यह इस संसार में मोहम्मद की तीन सूरतों के द्वारा उतरा है- बसरी, मलकी और हकी। सामान्य भाषा में हम कह देते हैं कि जिस तरह चंद्रमा की कलाएं बढ़ती हैं और १६वें दिन पूर्णमासी का चंद्रमा चमकता है, या सूरज का प्रकाश भोर से बढ़ता है और दोपहर में मार्तंड की भांति आकाश में चमकता है, उसी तरह तीनों सूरतों का ज्ञान है। बसरी को क्या कहा जाता है, दूज का चांद, मलकी को क्या कहा जाता है, पूर्णिमा का चांद और हकी सूरत को क्या कहा जाता है दोपहर का सूरज, लेकिन वास्तव में अगर देखा जाए तो तीनों ही सूरतें मोहम्मद की हैं। ऐसा नहीं है कि कुछ ज्ञान बसरी के पास कम था जो मलकी के पास आया और मलकी के पास कुछ कम था जो हकी के पास आया। तीनों ने परमधाम को देखा, तीनों ने परमधाम को एक समान संसार में जाहिर किया, लेकिन पूर्ण रूप से जाहिर करने की शोभा केवल हकी सूरत को दी गई। परमधाम का जो वर्णन बसरी सूरत मोहम्मद ने कुरान में किया, वही मलकी सूरत देवचन्द्र जी (श्यामा जी) ने और हकी सूरत इमाम महंदी श्री प्राणनाथ जी ने श्री कुलजम स्वरूप साहेब में किया।

"अब तुम निकसों नींद से, आए पोहोंची सरत" परमधाम की इस अनमोल निधि के संसार में जाहिर होने के बाद संसार के सभी जीवों के लिए केवल एक ही कर्तव्य शेष रह जाता है कि इसको आत्मसात कर अपने पग आत्म-जागृति की ओर बढ़ाए। यहां दो संभावनाएं होती हैं - अगर इतना ज्ञान सुनने के बाद भी हमारे हृदय में धामधनी के लिए प्रेम नहीं पैदा हो रहा है तो इसका अर्थ यह है कि हमारी धामधनी से कोई निसबत नहीं है और दूसरी संभावना यह होती है कि हमनें अभी इन बातों को अपने हृदय में ही नहीं उतारा जैसे मिहिरराज ठाकुर जब जयराम भाई कंसारा के पास पहुंचे थे तो क्या कहा था कि जयराम भाई कंसारा तुम कब तक कासा कूटते रहोगे?

यह क्या है, एक पुकार है। जिसके हृदय में वैराग्य का थोड़ा -सा भी संस्कार है या परमात्मा को पाने की चाहना है, उन्होंने एक बार पुकार लगते ही अपना सबकुछ धामधनी पर न्यौछावर किया है, फिर चाहे किसी रूप में भी परमात्मा उन्हें मिला हो। देवचंद्र जी की उम्र तो ११ वर्ष की थी, जब उनके मन में प्रश्न आया था कि मैं कौन हूं और मेरा भरतार कौन है? आज हम कितनी उम्र को पार कर लेते हैं लेकिन फिर भी वह वैराग्य हमारे हृदय में नहीं फूटता। मिहिरराज ठाकुर की उम्र भी कुछ १२ या १४ वर्ष की थी, जब वे देवचंद्र जी के पास पहली बार आए थे। उसके पश्चात् उनका तन वापस घर जरूर जाता था, लेकिन मन फिर नहीं लौटा। इसी प्रकार, लालदास जी एक बार श्री जी के पास आए तो फिर वापस नहीं लौटे और फकीरी ओढ़ ली थी। महाराजा छत्रसाल जी को देखिए, बुंदेलों का राजा जो किसी के सामने कभी सिर नहीं झुकाता था, पर भर की मुलाकात के पश्चात् अपना अपना तन, मन, धन सबकुछ धामधनी पर समर्पित कर दिया।

ये सब अपने समय की महान विभूतियां हैं जिन्होंने एक बार में ही धामधनी की पुकार पर अपना कबीला तो क्या, इस संसार के रीति-रिवाजों, रस्मों को छोड़ने में भी संकोच नहीं किया। लेकिन हम बंध जाते हैं संसार में, कुछ जोर पकड़ते हैं और फिर कुछ रुक जाते हैं। यह क्या हो रहा है, जिस तरह उगती हुई घास को हवा का एक तेज झोंका

भी उखाड़ देता है लेकिन एक बार वह अगर वट वृक्ष बन जाए, तो उसे भयंकर से भयंकर तूफान भी नहीं हिला सकता, उसी तरह जो प्रेम, ज्ञान और वैराग्य के संस्कार आपके हृदय में उभर रहे है, उन्हें अपने हृदय में इसी तरह बनाए रखिए। प्रेम की इस ज्योति को कभी भी क्षीण न होने दीजिए। यह संसार एक दिन था, एक दिन नहीं रहेगा। इसके वैभव, सुख संपदा, इसमें ही रह जाने वाले हैं। अतः जिस ब्रह्मात्मा ने एकजुट होकर के धामधनी को पुकारा और अपने प्रेम की गति में कभी कमी नहीं आने दी, केवल और केवल उसी ने ही धामधनी को अपने हृदय में बसाया और एक बार यदि धामधनी हृदय में बस जाएं, तो आपकी आत्मा परमधाम की गलियों में विचरण करने लगती है। फिर कोई रास्ता ही नहीं बचता कि माया का कोई संस्कार आपको इस संसार में वापस लेकर आए।

अंत में, सार रूप में हम यही कह सकते हैं कि जो प्रेम हम राज जी से करते हैं, जो वैराग्य हमारे हृदय में संसार के लिए उभरता है वह क्षणिक न हो। प्रेम की ज्योति को यदि हृदय में जलाया जाए तो वो निरंतर प्रचंड होती जाए। और एक दिन वह विरह की अग्नि का रूप ले जिसमें हमारे जीव के सारे संस्कार जलकर भस्म हो जाएं और आत्मा का हृदय पवित्र हो, जिसमें धामधनी अपना अर्श बना कर के विराजमान हो जाए।

बीतक साहब पूर्णाहुति

24 अगस्त 2025 को श्री प्राणनाथ ज्ञानकेन्द्र, खरेड़ी, जिला दाहोद (गुजरात में) श्री राजन स्वामी जी के मार्गदर्शन में समस्त दाहोद जिला तथा निकटवर्ती क्षेत्रों में चल रही बीतक चर्चा की सामुहिक पूर्णाहुति की गयी। पूर्णाहुति के अवसर पर दो दिन का विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया था, जिसमें स्वामी जी के साथ–साथ अनेक उपस्थित प्रचारकों ने अपनी वाणी से सुन्दरसाथ को लाभान्वित किया। कार्यक्रम के अन्त में ऐसी 92 बीतक साहब की पूर्णाहुति की गयी जिनमें से कई सुन्दरसाथ अपने घरों में पाठ कर रहे थे तथा अनेक स्थानों पर ज्ञानपीठ के विद्वानों व आत्म–जागृति महिला मण्डल की माताओं द्वारा चर्चा की जा रही थी। कार्यक्रम में लगभग 6,000 की संख्या में सुन्दरसाथ का समूह उपस्थित था। अन्त में, 55 नए सुन्दरसाथ ने स्वामी जी से तारतम ग्रहण करके धामधनी श्री राज जी से अपना सम्बन्ध जोड़ा।

इस अवसर पर प्राणनाथ ज्ञानपीठ के अन्य आचार्य अर्जुन जी, सूर्यप्रताप जी, विजय जी, संगीताचार्य रणजीत जी, उदीयमान प्रवक्ता चिराग जी, ज्योत्सना माता जी, स्थानीय धर्म प्रचारक रामसिंह भाई जी, धना भाई जी, श्री प्राणनाथ कन्या गुरुकुल की आचार्या किरण माता जी तथा वहां की सभी छात्राएं उपस्थित रहीं।

राजदिल, यूएसए

भारतीय समाज में जाति प्रथा

भारतीय समाज में जाति (caste) की अवधारणा वर्ण व्यवस्था से उत्पन्न मानी जाती है। ऋग्वेद के पुरुषसूक्त (१०.९०) में चार वर्ण (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र) का उल्लेख मिलता है। लेकिन उस समय यह व्यवसाय-आधारित विभाजन था, जन्म-आधारित नहीं। ब्राह्मण (ज्ञान व शिक्षा), क्षत्रिय (सुरक्षा व शासन), वैश्य (व्यापार व कृषि) वे शूद्र (सेवा व श्रम) में समाज विभाजित था। किन्तु बाद में इसे जन्म-आधारित बना दिया गया और यही जाति प्रणाली का मूल आधार बना। जाति प्रथा का विकृतिकरण शताब्दियों में यह व्यवस्था क्रमशः

- श्रेष्ठ-हीनता का पैमाना,
- शुद्ध-अशुद्ध का मिथक, और
- अस्पृश्यता का निर्माण

में परिवर्तित हो गई। इस प्रकार जाति प्रथा मानवीय मूल्य और समानता के विरुद्ध जाकर अमानवीय प्रथा में परिणत हो गई। यह अमानवीयता निम्नलिखित रूपों में देखी जा सकती है-

१. अस्पृश्यता – कुछ जातियों को छूना तक वर्जित।

२. शिक्षा से वंचित – शूद्र और दलितों को वेद अथवा शिक्षा से रोका गया।

३. धार्मिक अधिकार छीनना – मंदिर प्रवेश निषिद्ध, धार्मिक संस्कारों में भाग लेने का निषेध।

४. सामाजिक बहिष्कार – पानी पीने तक की मनाही, समाज में अपमान सहना।

५. आर्थिक शोषण – न्यून मजदूरी, जबरन श्रम, भूमिहीनता।

ये सब मिलकर जाति प्रथा को समाज के लिए अमानवीय घाव बना देते हैं। भारतीय समाज की ही देन क्यों?

- धर्मशास्त्रीय अनुमोदन – मनुस्मृति जैसे ग्रंथों ने शूद्र को 'सदा सेवक' घोषित कर कानूनी मान्यता दी।
- सामाजिक संस्थागतरण – गाँव, पंचायत, राजदरबार सभी ने जातिदृआधारित व्यवस्था को मजबूत किया।
- धार्मिक आड़ – "पूर्व जन्म का पाप/पुण्य" कहकर विभाजन को धार्मिक औचित्य दिया गया।
- राजनीतिक संरक्षण – विभिन्न साम्राज्यों और राजाओं ने ब्राह्मणवादी व्यवस्था को बनाए रखा जिससे जाति-भेद स्थायी हुआ।

सुधार आन्दोलन

भारतीय समाज ने भीतर से ही इस प्रथा के विरुद्ध संघर्ष भी किया-

- गौतम बुद्ध - सबको समान बताते हुए जाति-विहीन संघ की स्थापना।
- भक्ति आन्दोलन (कबीर, रविदास, नामदेव, चैतन्य) - जाति भेद का विरोध।
- महात्मा ज्योतिराव फुले, सावित्रीबाई फुले - शिक्षा और समानता का आन्दोलन।
- डॉ. भीमराव आंबेडकर - संविधान निर्माण कर अस्पृश्यता को गैरकानूनी घोषित किया।

दार्शनिक मूल्यांकन

- मानवता का आधार प्रेम, समानता और न्याय है। जाति प्रथा ने इन्हें नष्ट कर दिया।
- इसने मनुष्य को मनुष्य से भिन्न बनाया, जो परमात्मा की अद्वितीयता और आत्मा की समानता के विरोध में है।
- अतः जाति प्रथा केवल सामाजिक त्रुटि नहीं, बल्कि आध्यात्मिक दृष्टि से भी अज्ञान का परिणाम है।

अतः जाति प्रथा

- भारतीय समाज में विकसित,
- भारतीय धर्म-संस्कृति से पोषित, और
- भारतीय राज्य-सत्ता और शास्त्रों से संरक्षित अमानवीय देन है।

लेकिन इसी भारतीय समाज के भीतर सुधार आन्दोलन उठे जिन्होंने इसे चुनौती दी। आज भारतीय संविधान इसे अपराध मानता है, फिर भी इसका प्रभाव सामाजिक व्यवहार में शेष है। अतः कहा जा सकता है कि जाति प्रथा भारतीय समाज की घृणित मानसिकता की ऐतिहासिक देन है, पर यह देन गर्व का नहीं बल्कि अपमान, अन्याय और अमानवीयता का प्रतीक है। अमानवीय जातिवाद को हटाना ही वास्तविक धार्मिकता है।

मानव सभ्यता और धर्म का मूल उद्देश्य सदैव मनुष्य को मनुष्य से जोड़ना है - विभाजन नहीं, एकता लाना है। किन्तु विडम्बना यह रही कि धर्म के नाम पर इतिहास भर में विभाजन, भेदभाव और जातीय अत्याचार को वैधता दी गई। जातिवाद वही विकृति है जिसने समाज को तोड़ा और धर्म के असली मर्म को ढक दिया।

जातिवाद क्यों अमानवीय है ?

- मानव समानता का उल्लंघन- सभी मानव एक ही परमचेतना के अभिन्न अंग हैं। जातिवाद जन्म के आधार पर उच्च-नीच ठहराता है और मनुष्य को परमात्मा का अंश नहीं, जाति का बंधक बना देता है।
- आत्मिक सम्भावना का दमन- जातिवाद गुण, क्षमता और आध्यात्मिक विकास को नहीं, बल्कि रूप, जन्मस्थान और वंश को आधार बनाता है और अवसर रोकता है।
- हिंसा और पीड़ा का चक्र- सामाजिक अपमान, आर्थिक शोषण और धार्मिक बहिष्कार जातिवाद की उपज हैं, जिसने न केवल पीड़ित समुदाय बल्कि पूरे समाज को असंतुलित और हिंसक बना दिया।

वास्तविक धार्मिकता की परिभाषा

धर्म का सार 'धारण करने की शक्ति' है - सत्य, करुणा, प्रेम और समानता को धारण करना।

गीता में श्रीकृष्ण कहते हैं :

विद्याविनयसम्पन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि।
शुनि चैव श्वपाके च पण्डिताः समदर्शिनः।।

अर्थात् विद्या और विनययुक्त विप्र, गाय, हाथी, कुत्ता या चाण्डाल-पण्डित की दृष्टि सबमें समान होती है। यह श्लोक स्पष्ट करता है कि परमात्मा की दृष्टि समानता पर आधारित है, विभाजन पर नहीं। बुद्ध का उपदेश : "न जात्या ब्राह्मणो होति, न जात्या होति दल्लको" अर्थात् जन्म से नहीं, आचरण से ही मनुष्य का मूल्य होता है। श्री निजानन्द सम्प्रदाय का दृष्टिकोणः परमात्मा एक हैं, सब आत्माएँ उनके अंग हैं। जातिवाद ब्रह्मज्ञान के मार्ग में सबसे बड़ा अज्ञान है।

जातिवाद हटाने के लिए धार्मिकता क्यों आवश्यक है ?

- धर्म आत्मबोध है- आत्मा मायाजन्य सभी उपमाओं से परे है। आत्मा न ब्राह्मण है, न शूद्र; न पुरुष, न नारी। आत्मा अमर, अजन्मा और शुद्ध है। अतः आत्मा की पहचान करते समय जाति का प्रश्न ही नहीं उठता।
- धर्म प्रेम है- धार्मिक व्यक्ति सभी प्राणियों को परमात्मा की सृष्टि मानकर व्यवहार करता है। जहाँ घृणा और अपमान है, वहाँ धर्म नहीं, केवल अंधविश्वास है।
- धर्म न्याय है- धर्म अन्याय का अन्त और न्याय की स्थापना करता है। जातिवाद अन्याय का सबसे पुराना रूप है। उसका अन्त करना ही धर्म का कर्तव्य है।

सामाजिक और आध्यात्मिक प्रभाव

- जातिवाद मिटने पर समाज में समरसता आती है।
- प्रतिभा, योग्यता और सद्गुण जाति-धर्म के बंधन में न रुककर मानव हित में प्रयुक्त होते हैं।
- आत्मबोध और प्रेम-भक्ति का मार्ग सबके लिए खुलता है। किसी जाति विशेष को ही परब्रह्म प्रियतम के साक्षात्कार का अधिकार है - यह भ्रान्ति समाप्त होती है।

निष्कर्ष

सच्चा धर्म समानता, करुणा और सत्य पर आधारित जीवन है। यदि हम अभी भी जातिवाद को धर्म मानते हैं तो वह केवल अज्ञान और पाखण्ड है। इसलिए, अमानवीय जातिवाद को हटाना ही वास्तविक धार्मिकता है। श्री प्राणनाथ जी ने तारतम वाणी द्वारा सम्पूर्ण मानवता के हित हेतु उच्च उद्घोष में कहा है-

जात एक ख़सम की, और ना कोई जात।
एक ख़सम एक दुनिया, उड़ गई दूजी बात।।

यह कार्य बाहरी सुधार से नहीं, आत्मबोध और हृदय परिवर्तन से ही सम्भव है।

सोम सी. बारिया, दाहोद

सो अब कहाँ है महमंद ?

जैसाकि हम सभी जानते हैं कि इंजील, जम्बुर, तौरेत और कुरान चारों किताबें कतेब पक्ष की है। श्री प्राणनाथ जी ने इन चारों को मनसुख करके नए सिरे से चार किताबें नाजिल की है जिन्हें दुनिया पहली बार सुन रही है और उनमें अक्षरातीत के स्वरूप श्री प्राणनाथ जी का दीदार कर रही है। ये चारों किताबें क्रमशः रास, प्रकाश, कलश और सनंध हैं। सनंध किताब में कुरान की सारी बातों का बयान किया है। "सुनियो दुनिया आखिरी भाग बड़े है तुम".... अकेली दुनिया ही नहीं हमारा भी बड़ा भाग्य है। सनंध प्रकरण २८ में मोमिनों को स्वयं की और आखिरी महमंद की पहचान कराई है-

पहेले ओलखो आपको, पीछे करो मोसो पहेचान ।
देखो अपने अरस को, याद करो निसान ।।(२९/२४)

ऐसा क्यों कहा गया? "पहेले ओलखो आपको" अर्थात् जो ब्रह्मसृष्टि परमधाम से उतरी है और जीवों का अधिष्ठान बनाकर बैठी है उसी को कहा है की आप अगर ब्रह्मसृष्टि हो तो अपने आपको पहेचानो। "पीछे करो मोसो पहेचान" का तात्पर्य है कि जो ब्रह्मसृष्टि परमधाम से आई है वो ही तो अपने आप की पहचान करेगी और मेरी ओलखान कर सकती है। हम सुन्दरसाथ को संबोधित किया है कि अपने धाम को देखो और याद करो निसान।हमें कौन से निसान याद करने है? निसान याद करने के लिए चितवनि करनी पड़ेगी। इन चर्म चक्षुओं से कुछ नजर नहीं आने वाला है। इसीलिए इस चौपाई के पहले की चौपाई को देखा जाय तो-

वजूद आवे खेल में, सो सब खाव्ब के जान।
खाव्ब देखे जो पर थे, तुम तासो करो पहेचान ।।(सनंध २९/९)

इस संसार में जो तन है वो सब स्वप्न वाला है, अर्थात् मिट जाने वाला है। हमारा ये तन क्षणभंगुर है, लेकिन राज जी के चरणों में बैठ कर परात्म ये खेल देख रही है। उस नूरी तन की हमें पहचान करनी है। परात्म की नजर को राज जी ने अपने दिल में लेकर अक्षर ब्रह्म के दिल के परदे पर खेल दिखला रहे है। आत्मा जिसे हम ध्यान, सुरता, वासना कहते हैं उसी को तो राज जी ने जीवों पर उतारा है। असल तन परमधाम में है। ये स्वप्न का तन है। अब देखो पहेले रसूल महमंद बनके कुरान लाये थे वो कौन थे? और अब ये सारा परमधाम का खजाना लेकर आनेवाला

आखरी महमंद कौन है?

जब इमाम इत आइया, तब ऐ सारे संग।
सरूप मेहँदी याही को, यामे देखोंगे कई रंग।।(सनंध २९/१८)

ये इमाम कौन है? क्या लेकर आये हैं? आज दिन तक जिसको खोजने का प्रयास करते रहे है वो पूर्ण ब्रह्म परमात्मा सारे आलम का रब बनके आया है। सारे शास्त्रों में, कतेबों में जिसके आने की भविष्यवाणी बताई थी वो ही तो सब कुछ लेकर आ गए हैं। सारी दुनिया को अखंड मुक्ति देने वाले इस्लाम के इमाम मेहँदी, हिन्दुओं के विजयाभिनंद निष्कंलक बुद्ध अवतार पूर्ण ब्रह्म श्री प्राणनाथ जी और इसाईयों का सुप्रीम ट्रुथ गह्ड आ गये हैं। अब हम ही पहचान नहीं करेंगे तो और कौन करेगा? कुल १८,७५८ चौपाईयों की तारतम वाणी है। उसमें जाहेर और बातूनी दोनों अर्थ हैं उसको समझ कर हमें राज जी की पहचान करनी है। एक चौपाई से समझिये–

जो हक़ सूरत देखिये इन में, तो ख्वाब देवे सब भान।
ले मायने देखो बातुन, ज्यों होवे सब पहेचान।।(सनंध २९/१०)

यहां किसमें हक़ सूरत देखने की बात है? मेहराज के तन में इन्द्रावती की आत्मा है। उस पर पांच शक्तियां है़। हम प्राणनाथ जी किसको कहते है? मेहराज के तन को नहीं कहते है। राज जी की सूरत उसमें है, ये बातून अर्थ है। आज प्राणनाथ जी को संत, पैगम्बर और महापुरुष का दर्जा देने वालों को ये चौपाई समझनी चाहिए। 'अब सो कहाँ है महमंद' - क़यामतनामा की अंतिम चौपाई को देखा जाय- 'महमंदे करी उमत्त रोशन।' यहाँ कौन से महमंद की बात है? ये सोचो, मंथन करो। जब तक वाणी का मंथन नहीं होगा, तब तक उपला मायना लेकर हम शरीयत में ही फंसे रहेंगे।

गत माह ब्रह्मकुमारी संस्थान, माउंट आबू में "विश्व एकता" विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन हुआ, जिसमें अनेक विद्वानों ने भाग लिया। इस अवसर पर आदरणीय स्वामी जी ने सर्वग्राही दृष्टिकोण से परमात्मा का परिचय देते हुए निजानंद समाज के सिद्धांतों को भी सबके सामने रखा।आशा है कि इस प्रकार के छोटे–बड़े कार्यक्रम आगे भी समाज में समता, समरसता और सामाजिक सद्भावना के संदेश को और अधिक व्यापक रूप देंगे। ऐसे प्रेरक आयोजन करने वाली सभी संस्थाएं निस्संदेह बधाई की पात्र हैं।

अमृत शर्मा, झापा, नेपाल

प्रलय : तात्त्विक व आध्यात्मिक दृष्टिकोण

जब हम 'प्रलय' शब्द सुनते हैं, तो अधिकतर लोग इसे पूर्ण विनाश समझते हैं। परंतु यह समझ अपूर्ण व भ्रमपूर्ण है। यदि कुछ 'नष्ट' हो जाता है, तो उसका कोई अस्तित्व शेष नहीं रहता। जबकि प्रलय में अस्तित्व बना रहता है, केवल वह अपनी मूल अवस्था में समाहित हो जाता है। इससे यह स्पष्ट होता है कि कुछ भी वास्तव में नष्ट नहीं होता। यह दृष्टिकोण अद्वैत को पुष्ट करता है। चार प्रकार की प्रलय आध्यात्मिक दृष्टि से -

१. नित्य प्रलय - सदैव घटने वाली प्रलय यह हर क्षण, हर घड़ी, हर दिन हो रही होती है। आध्यात्मिक दृष्टि से, यह तुम्हारी वासना की अवस्था है। जैसे, हम सोचते हैं : 'अब मैं ऐसा करूंगा, अब वैसा करूंगा।' फिर उसी वासना को छोड़कर किसी नई कल्पना में बहक जाते हैं। उसी चाह से प्रारंभिक शून्यता में लौटना ही नित्य प्रलय है।

२. नैमित्तिक प्रलय - किसी निमित्त (कारण) से होने वाली प्रलय यह पंचभूत से बने शरीर का पुनः मूल प्रकृति में लौटना है। आध्यात्मिक रूप से देखें तो यह स्थूल शरीर, स्थूल इन्द्रियाँ (जो देख-सुन-चख-सूंघ-स्पर्श कर जानती हैं), और अनुभव-रहित गूढ़ ज्ञान को त्यागकर सूक्ष्म शरीर (मन, प्राण, चेतना) में स्थित हो जाना ही नैमित्तिक प्रलय है।

३. प्राकृतिक प्रलय- प्रकृति से उत्पन्न सब कुछ का लय समस्त व्यक्त (जगत) का अव्यक्त में लौटना। आध्यात्मिक दृष्टिकोण से प्रकृति के मूल तीन गुण (सत्व, रज, तम) ही सूक्ष्म शरीर (मन, बुद्धि, अहं) की जड़ हैं। जब मन, बुद्धि और अहं इन तीन गुणों में लीन होकर अपनी शाश्वत अवस्था में लौटते हैं, तब वह प्राकृतिक प्रलय है।

४. आत्मान्तिक प्रलय- पूर्ण और अंतिम प्रलय यह ब्रह्म अवस्था है। जब साक्षी भाव (देखने वाला) भी लय हो जाए, और आत्मा स्वयं की ही गहराई में विलीन हो जाए, तब आत्मा, परमात्मा में एक हो जाती है। यह वह अवस्था है जहाँ जीव ब्रह्मरूप हो जाता है, अनेकता से एकता में प्रवेश करता है।

अंत में, हमनें जिन १४ लोकों, ब्रह्मा-विष्णु-महेश, नारायण, विराट ब्रह्माण्ड की समाप्ति की बात सुनी है, वह सब भी इसी प्रकार तात्त्विक संकेत हैं। वह स्थान नहीं हैं, गुणात्मक अवस्थाएँ हैं। यदि यह समझ लिया जाए, तो अज्ञान स्वयं हट जाएगा, पाखंड स्वयं ढह जाएगा और अध्यात्म का सत्य तत्त्व प्रकाशित होगा।

गीता चौहान, जयपुर

हमारा अकल्पनीय सौर मंडल

पृथ्वी केवल सूर्य की परिक्रमा ही नहीं कर रही है - यह आकाशगंगा के माध्यम से भी घूम रही है। हमारा सौर मंडल लगभग ५१४,००० मील प्रति घंटे (८२८,००० किलोमीटर प्रति घंटे) की आश्चर्यजनक गति से यात्रा करता है। यह प्रकाश की गति का लगभग १/१३००वाँ भाग है। इस अविश्वसनीय वेग के बावजूद, हमें गति महसूस नहीं होती क्योंकि यह स्थिर है और हम अपने चारों ओर मौजूद हर चीज के साथ घूम रहे हैं। यह गति हमारी आकाशगंगा के केंद्र में विशाल ब्लैक होल के गुरुत्वाकर्षण खिंचाव के कारण है, जिसे सैगिटेरियस ए के नाम से जाना जाता है। आकाशगंगा स्वयं घूम रही है, और हमारे सौर मंडल को एक कक्षा पूरी करने में लगभग २२५-२५० मिलियन वर्ष लगते हैं - एक ब्रह्मांडीय यात्रा जिसे गैलेक्टिक वर्ष कहा जाता है। यह गति पृथ्वी की अन्य गतिविधियों को बढ़ाती है, जिसमें अपनी धुरी पर घूमना और सूर्य के चारों ओर परिक्रमा करना शामिल है।

साथ में, ये गतियाँ अंतरिक्ष के माध्यम से एक जटिल पथ बनाती हैं। आकाशगंगा स्वयं भी लगभग २५०,००० मील प्रति घंटे की गति से एंड्रोमेडा आकाशगंगा की ओर बढ़ रही है। तो, पृथ्वी एक साथ कई अतिव्यापी गतियों का हिस्सा है। ये विशाल गतियाँ इस बात पर प्रकाश डालती हैं कि हमारा ब्रह्मांड कितना गतिशील और परस्पर जुड़ा हुआ है। यद्यपि हम अभी भी पृथ्वी की सतह पर प्रतीत होते हैं, हम सभी ब्रह्मांड में एक जंगली यात्रा पर हैं। यह परिप्रेक्ष्य दर्शाता है कि ब्रह्मांड का कितना बड़ा हिस्सा मानवीय धारणा से परे संचालित होता है।

आज सर्वप्रथम मै इस पृथ्वी की बात करूंगी जो इस ब्रह्मांड का एक माइक्रोन भी नहीं है। मतलब माइक्रोन जो हम अपनी आंखों से नहीं देख सकते, उसका भी अरबों खरबों से भी खरबों छोटा हिस्सा है... अकल्पनीय है। तो आइए शुरुआत करते हैं अपने सौरमंडल से अपने सौरमंडल में हमारा सूर्य है जो अनंत काल से अपने समय पर ऊगता है और अपने समय पर अस्त हो जाता है। वही प्रक्रिया चंद्रमा की भी है।

इसके अतिरिक्त वैज्ञानिक तौर पर देखा जाए तो पृथ्वी का भ्रमण उस स्पीड से है जिसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते। अर्थात् २४ घंटे में वह अपना एक चक्कर पूरा कर लेती है। ऐसी स्थिति में माइक्रोन तो छोड़िए

माइक्रोन के खरबों२ अगर कोई ०००१ प्रतिशत हिस्सा असंतुलित होता है तो पृथ्वी एक माइक्रो सेकंड में सब कुछ खत्म कर सकती है। अब इसमें सोचने वाली बात यह है कि इन सबको नियंत्रित कौन करता है? आप कहेंगे कि यह सब अपने आप होता है। आपकी बात हम ने मान ली, लेकिन आधुनिक विज्ञान कहता है कि अपने आप कुछ भी नहीं होता। एक गाड़ी को चलाने के लिए भी उसमें ईंधन चाहिए होता है, और अपने इस भौतिक शरीर को चलाने के लिए भी खाने की आवश्यकता होती है। तो इस सौरमंडल को चलाने के लिए कोई तो है। जो इसको कंट्रोल कर रहा है बस वही परमात्मा है। इनको आप कोई भी नाम दे दीजिए।

आपने प्रकृति के समस्त जीव-जंतुओं और पेड़-पौधों को देखा होगा लेकिन एक बात कभी आपने नहीं सोची होगी कि अमरूद के पेड़ से अमरूद ही आता है। आम के पेड़ से आम ही आता है। और प्रकृति के नियम इतने सख्त है कि इससे किसी भी प्रकार की छेड़खानी करना असंभव है जिसमें इंसान असफल रहा है। तो ऐसे में यह सब कैसे संभव है बिना किसी परमात्मा शक्ति के अगर कोई शक्ति ना हो तो अमरूद के पेड़ पर आम क्यों नहीं आ जाते। एक बार विचार करके देखिए कोई तो शक्ति है। उसे कोई भी नाम दीजिए। लेकिन कोई तो है? सबसे बड़ी बात यह है कि यह सिर्फ मैंने अपने सौरमंडल में पृथ्वी की बात की है जो एक बहुत ही महीन छोटा कण है। इसके अतिरिक्त यह संपूर्ण ब्रह्मांड और ना जाने कितने असंख्य ब्रह्मांड इस सृष्टि में मौजूद है।

उन सब को नियंत्रित करती है, यह परमात्मा शक्ति जिसको आप चाहते हैं कि एक छोटे से मानव शरीर से देख सके महसूस कर सके यह असंभव है। और इसको महसूस करने के लिए आपको ध्यान की अनंत गहराइयों में जाना होगा, जो आपको परमात्मा का एहसास करा सकता है। अन्यथा आप सोचे इतनी महान परमात्मा शक्ति को आप थोड़ी सी ही मेहनत से महसूस कर प्राप्त कर सके तो यह असंभव है। क्योंकि एक छोटी सी बात है कि जो अखंड ब्रह्माण्ड जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती उसका कुछ शब्दों में बांधकर भौतिक चीजों में वर्णन करना असंभव है। तो ध्यान करें और ध्यान की अनंत गहराइयों में जाकर इन शक्तियों को महसूस कर आप अपने आप को भी परमात्मा के मिलन की ओर ले चले

यह मानव शरीर अमूल्य और बहुमूल्य इसलिए कहा जाता है कि इस मानव शरीर में इस ब्रह्मांड की सारी शक्तियां मौजूद है... बस उन्हे जगाने की जरूरत है।

उपवास एक आध्यात्मिक और शारीरिक अनुशासन है जो आत्म–शुद्धि, ध्यान और एकाग्रता बढ़ाने में मदद कर सकता है। उपवास के दौरान व्यक्ति अपने मन और शरीर को शुद्ध करने का प्रयास करता है, जिससे वह अपने आध्यात्मिक लक्ष्यों की ओर अधिक केंद्रित हो सकता है।

१९वां वार्षिक उत्सव

श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, सरसावा का १६वां वार्षिक उत्सव १४ से २० सितंबर, २०२२ तक बड़े हर्षोल्लास से मनाया गया। कार्यक्रम का प्रारंभ श्री कुलजम स्वरूप साहेब के पांच पारायणों से हुआ।

हर वर्ष की भांति प्रातः सामुहिक ध्यान-चितवनी कराई गई। इसके पश्चात् तीन सत्रों में रोजाना श्री राजन स्वामी जी एवं अन्य विद्वानों द्वारा तारतम वाणी के अनेक प्रकरणों की चर्चा हुई। इसके अतिरिक्त स्थानीय और बाहर से पधारे सुंदरसाथ द्वारा वाणी गायन भी हुआ। वाणी गायन करने वालों में सुश्री वनिका प्रधान, सान्या ग्रोवर, विधि त्यागी और शिखा-सुमति प्रमुख थीं। अंतिम दिन, श्री स्वामी जी द्वारा प्रश्नोत्तरी के माध्यम से सुंदरसाथ की शंकाओं का समाधान किया गया।

चिर-प्रतीक्षित संस्कृत विश्वविद्यालय का शिलान्यास १६ सितम्बर, २०२५ को सम्पन्न हुआ। भूमि पूजन स्थानीय राजनेताओं की उपस्थिति में पन्ना जी मुख्य पुजारी श्री अनिरुद्ध जी द्वारा किया गया। यह सभी सुन्दरसाथ के प्रेममयी सहयोग से ही यह सम्भव हो सका है जिसके लिए वे धन्यवाद और प्रशंसा के पात्र हैं।

इस बार वार्षिक उत्सव पर निम्नलिखित साहित्य का विमोचन/प्रकाशन किया गया-

- सेवा पूजा (गुजराती)
- प्रेम सुधा
- निजानंद की नींव
- वेदांत नवीनतम
- उपनिषदों का तारतम्य
- तारतम्य सुधा (भाग ३ व ४)
- कड़वे सत्य (द्वितीय संशोधित संस्करण)
- बीतक से शिक्षा (द्वितीय संशोधित संस्करण)
- हमारी शाश्वत सम्पदा (द्वितीय संशोधित संस्करण)

इनके अतिरिक्त एक ऑडियो एल्बम का लोकार्पण भी हुआ, जिसमें अठारह मधुर कीर्तन सम्मिलित हैं।

इस अवसर पर विभिन्न रोगों के निदान के लिए एक चिकित्सा शिविर का आयोजन भी किया गया जिसका बड़ी संख्या में आगंतुक सुंदरसाथ ने लाभ लिया।

देश-विदेश से पधारे सुंदरसाथ में निजानंद समाज के धर्मगुरु डॉ. दिनेश पंडित, महामंडलेश्वर संत कमल किशोर, मुनी सत्यजीत, पन्ना जी के वरिष्ठ धर्मोपदेशक श्री देवकरण गांधी, भूतपूर्व आई.ए.एस. अधिकारी डॉ. एस. पी. आर्य, शेरपुर से श्री राज कुमार पालीवाल आदि सम्मिलित थे।

चित्रावली

श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ
वार्षिकोत्सव

स्वर साधक
श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ
वार्षिकोत्सव

स्वर साधक
सा
रे
ग
म
प
ध

गुजरात
सूरत
सिक्किम

१९वां वार्षिक उत्सव : आगंतुक सुंदरसाथ के अनुभव

प्रेम प्रणाम जी ! श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ सरसावा के २६वें वार्षिकोत्सव की अनुभूति को कैसे प्रस्तुत करें जहां आनंद ही आनंद, प्रेम ही प्रेम, सेवा ही सेवा का प्रवाह श्री स्वामी जी के सानिध्य में हमे प्राप्त हुआ। हम अपने प्रांत मोडासा के सभी सुंदरसाथ के साथ एक प्रण करके आए थे कि हम सब मिलकर स्वामी जी की आज्ञा का पालन करें और जितना भी हो सके उतना सुंदरसाथ की चरणधुली बनने का सौभाग्य प्राप्त करें जो हमें इस वार्षिकोत्सव में प्राप्त हुआ। हम सभी सुंदरसाथ धन्य- धन्य हो गए। हम सभी को अखंड आनंद की प्राप्ति हुई जो हम कभी भी नहीं भूलेंगे। स्वामी जी का लाड-प्यार पाकर हम धन्य हो गए, हमारा तो जीवन ही सफल हो गया। १४ से २० सितंबर तक हमनें जो भी पाया है वह शायद हमारे जीवन में कभी नहीं पाया, ऐसा मेरा आत्मिक भाव है। हम श्री स्वामी जी, श्री प्रवीण जी, श्रीअशोक जी का और वाणी गायन टीम का तहे दिल से शुक्रिया अदा करते हैं। पल-पल हमें अर्श के सुखों की लज्जत मिली। सभी के चरणकमल में कोटि-कोटि प्रेम प्रणाम जी।

-विपिन कुमार निजानंदी

***

एक क्रान्तिकारी कदम की शुरुआत हुई। सफलता हासिल करनें के लिए संगठन और अत्यधिक मेहनत की जरूरत हैं। सेवा सिर्फ वचन से ऊपर उठकर हकीकत में जीव निछावर कर के आगामी ५० वर्ष तक निरन्तर चले तो दुनिया में निजानंद का परचम फैलेगा जिसकी सुगन्ध समूचा ब्रह्माण्ड को मिलेगी। व्यापक दृष्टिकोण और सार्वभौम को आदर्श मान कर विश्व बन्धुत्व को कायम रखना होगा। आनन्द के बीज बो चुके हैं, अब अखण्ड की और चलना होगा। बहुत ही आनन्दमय वार्षिकोत्सव।। प्रेम प्रणाम जी सुन्दरसाथ जी।

-होमनाथ निजानंदी

***

इस बार का १६वां वार्षिक महोत्सव ही मात्र नहीं था ये निज-आनन्द की आध्यात्मिक अनुभूति था। हजारों प्राणाधार सुन्दरसाथ के चरणरज से ज्ञानपीठ की धरती धन्य-धन्य हो रही थी। पूज्य स्वामी जी के दिल से उमड़ता हुवा दिव्य प्रेम ज्ञानपीठ में पधारे हजारों सुन्दरसाथ के दिलों तक पहुंचकर उनको आनंदित कर रहा था। प्रेम प्रणाम जी।

-वालाजी निजानंदी

***

दिव्य आनन्द प्रेम का वातावरण का अनुभव हुआ, पूज्य स्वामी जी का सानिध्य, पूज्य आचार्य जन, डॉ. साहब जी का अनमोल प्रेम भरी प्रेरणा, आदरणीय प्रचारक जनों का ऐतिहासिक समागम व प्यारे सुन्दरसाथ जी मुल मिलावा अत्यन्त्य सुखकारी था। प्रेम की धाराएँ मानों सबको सिचिंत कर रही थी। शीतलता का अनुभव हो रहा था। ज्ञानपीठ के आदरणीय ट्रष्टी जन, प्यारे विद्यार्थी जन, आदरणीय आचार्य जन सभी की कठोर साधना से सम्भव हो पाया हैं। सभी को हृदय की गहराई से धन्यवाद। प्रेम प्रणाम जी।

-किशोर सितोला

***

मैने लाइव कास्ट पूरा देखा जैसे कि मैं सरसावा में ही बैठ कर ही आनंद ले रही हूं। संदेह ही नहीं आत्मिक हृदय से में सरसावा में ही हूं ऐसा लगता था। प्रेम प्रणाम जी। **-जयश्री आदित्य**

मैने भी ऐसा हि अनुभव किया जब चौहान जी ने भाव रखे और ओंकार अंकल जी रोये, तब सबके भाव वही थे। ज्योत्सना माता जी हों या अशोक जी, प्रवीण जी सबके आँखें नम थीं। मोबाइल हाथ में लेकर जिस घर में लाइव देख रही थी वो दीदी सब फूट-फूटकर रोये कि धनी कितना प्यारा मेला है। हमें जगाने की हरसम्भव कोशिश पूज्य स्वामी जी कर रहे हैं। हममें से कई तो बड़े निष्ठुर जीव पकड़ कर बैठे हैं जो इतने पवित्र उच्च कोटी की रहनी है उनमें भी दोष निकाल कर अस्तित्व हीन बातें विडिओ बनाकर पोस्ट करते हैं उनको दंड मिलेगा वो पछतायेगे। पढ़ो वाणी को भागे सब शक। आप आओ ज्ञानपीठ आपके मन के संशय दूर करे ये कोई तरीका नहीं अभिमान मे भरके जो पढ़ा दिया गया उनको सही मानकर अपने घर की बातों को क्या अखबारों मे छापा जाता है... नए आने वाले प्रवाही जन भी संदेह मे पड़ते हैं। क्या हम वाणी को फैलाने का काम कर रहें हैं या तोड़ने का छुपाने का, सोचे विचारें।

-प्रीति सैनी

***

पूज्य स्वामी जी के चरणों में कोटि-कोटि प्रेम प्रेम प्रणाम जी। श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ सरसावा के १६वां वार्षिकोत्सव में जाकर एक अलौकिक आनंद की अनुभूतियां हुई। वहां की दिनचर्या की शुरुआत चितवनि एवं तत्पश्चात पूरे दिन वाणी गायन एवं महान विभूतियों द्वारा चर्चा सुनकर तारतम्य ज्ञान के माध्यम से अनेकों आध्यात्म जगत के छुपे रहस्यों का ज्ञान हुआ। आसपास का वातावरण शांत और आलौकिक आभा बिखेरे हुए था, माना चारों ओर फरिश्ते नीचे उतर आए हों। वास्तव में, ब्रह्मसृष्टि के रूप में परमधाम की रूहों के चाल-चलन, मीठी वाणी, एक-दूसरे के प्रति प्रेम कूट-कूट कर भरा देख यह पक्का अहसास हुआ कि यह कोई साधारण स्थान नहीं है। यह फरिश्ते भी अवश्य परमधाम की आत्माएं ही हैं। ऐसा लग रहा था मानों इस माया के असत्य, जड़ और दुख से दूर फरिश्तों की दुनिया में जहां केवल आलौकिक आनंद ही आनंद की अमृत धारा बह रही हो। सत्य को प्रमाण की आवश्यकता नहीं होती, यहां प्रत्यक्ष आत्मिक अनुभव हो रहा था। पूज्य स्वामी जी के सानिध्य में वहां गुरुकुल में छोटे- छोटे बच्चों के आलौकिक चेहरे, ब्रह्म ज्ञान, वाणी गायन सुनते मेरा रोम-रोम कांप रहा था। ब्रह्म ज्ञान को पूरी दुनिया में प्रसार कर, जीव आत्माओं को जागृत कर अखंड मुक्ति का वर्सा देने स्वयं धाम के धनी आवेश स्वरूप में परमहंस बन सभी को जागृत कर रहे हैं। अंत में, अपने अनुभव से मैं इतना कहना चाहता हूं कि माया के इस संसार में जब तक हैं, माया अपना ज़ोर तो दिखाएगी ही, परंतु वाणी मंथन, चितवनि और सेवा पूजा नित्य करने से जीव को बल मिलता है और माया के प्रहारों से बच कर अपने जीव को जागृत कर वापिस अपने घर परमधाम चलना है। पूज्य स्वामी जी, डॉ. प्रवीण जी, आचार्य अशोक जी, वाणी गायन एवं चर्चा करते उन सभी सेवाधारी सुंदरसाथ जी के चरणो में कोटि-कोटि प्रणाम जी।

रात के रही रुक मत जाना, सुबह की मंजिल दूर नहीं

अर्थात इस अज्ञान रूपी, दुखमय अंधकार में रुकना नहीं, बस नित्य चितवनि, वाणी मंथन, सेवा पूजा करते जाना है। सुबह की मंजिल अर्थात् परमधाम में मूल मिलावे में जागृत होकर धनी के आनंद के झूलों में झुला झूलेंगे।

-राज मेहता

***

इस साल १६वें वार्षिकोत्सव के कार्यक्रम में श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ के परिसर में हमनें जहां देखा, वहां प्रेम ही प्रेम दिखाई दे रहा था - न वर्गवाद का भेद न प्रांतवाद का भेद। सभी सुंदरसाथ में एकदिली का भाव दिखाई दे रहा था। हर कोई परस्पर प्रेम से बातचीत करते एवं झुककर प्रणाम करते। इस प्रकार का आचरण देखकर हमें लगता था कि श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ हमारा ही है। पूज्य स्वामी जी हमें बार-बार कहते हैं कि ज्ञानपीठ सारे विश्व के लिए है। यहां जो आहार की शुद्धता है हमें ऐसी शुद्धता कहीं और देखने को नहीं मिली है। यहां हमनें यह भी देखा है, कि श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ में ब्रह्मवाणी

गायन एवं बह्मवाणी चर्चा (चितवनि-रहनी) को ही महत्व दिया जाता है क्योंकि इसी से ही आत्म- जागृति होनी है। यहां लंगर-भंडारों और शोभायात्रा को बिल्कुल महत्व नहीं दिया जाता है। मंच का कार्यक्रम भी अनुशासन एवं समय से शुरू होता है, जरा भी समय व्यर्थ नहीं। हमनें बहुत कुछ इस वार्षिकोत्सव में सीखा है। ऐसे हमारे प्यारे विनम्रता की मूर्ति सतगुरु श्री राजन स्वामी जी को पाकर हम अपने आपको धन्य-धन्य अनुभव करते हैं।

– वालू निजानंदी

***

बहुत अच्छा कार्य सम्पन्न हुआ। सभी ने, चाहे किसी भी सेवा में हों, अपना सहयोग दिया। इसके लिए सभी को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएँ। परंतु हमें और अधिक प्रयास और परिश्रम करने की आवश्यकता है। सेवा कार्य केवल शब्दों तक सीमित न रहे, बल्कि व्यवहार में और ज़मीन से जुड़कर सभी को करना होगा। तभी हमारा मिशन ऊँचाइयों को छू पाएगा। प्रेम प्रणाम जी!

– श्याम अधिकारी

***

पूज्य स्वामी जी के अथक प्रयास से और धामधनी की कृपा से इस बार वार्षिक उत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया स हमें बहुत आनंद आया और अब संपूर्ण विश्व में तारतम वाणी की डंका बजना शुरू हो रहा है और हम सब सुंदरसाथ को तैयार री होना है। प्रेम प्रणामजी।

– बिनोद भुरतल

***

श्री प्राणनाथ जी की अपार मेहर व श्री राजन स्वामी जी के सत्य शुद्ध पवित्र भाव से हम सभी सुंदरसाथ को जो प्रेरणा और दिव्य ब्रह्म ज्ञान मिला, उससे हम धन्य हुए। ज्ञानपीठ के सभी सुंदरसाथ का निस्वार्थ प्रेम पाकर भी हम धन्य हुए। आप सभी को हृदय से कोटि-कोटि प्रणाम।

– योगेश गांधी

***

श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, सरसावा में आयोजित १९वें वार्षिक उत्सव में जाकर यह अनुभूति हुई कि वर्तमान समय में पूरे भारतवर्ष एवं विश्व में और निजानंद समाज में ऐसा मंच कहीं पर भी नहीं मिलेगा जैसा मंच श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, सरसावा का है। अध्यात्म की इतनी गूढ़ ज्ञान चर्चा और सभी के भौतिक और आध्यात्मिक प्रश्नों के उत्तर इतने सरल और सहज भाव से प्राप्त होते हैं कि पूरे विश्व का भ्रमण करने के बाद भी कोई समाधान नजर नहीं आता और इन सभी का समाधान केवल और केवल श्री राजन स्वामी जी, डॉ. प्रवीण जी, आचार्य अशोक जी, आचार्य शशांक जी, आचार्य चंद्र गुरु जी एवं ज्ञानपीठ में उपस्थित सभी विद्वतजन के द्वारा बहुत ही सरल शब्दों में किया जाता है। मेरा अपना अनुभव है कि पूरे भारत का भ्रमण कीजिए, अगर वास्तव में आप अक्षरतीत परब्रह्म के विषय में या फिर धर्म के गहरे ज्ञान के विषय में कुछ जानना चाहते हैं तो कहीं पर भी कुछ नहीं मिलेगा। लोग सिर्फ कर्मकांड करवा कर या फिर नाच-गाना करके, इधर-उधर घूमाकर और कुछ किस्से-कहानी सुना कर आपको आपके घर भेज देते हैं। पूरे संसार में यही स्थिति चल रही है। जो वास्तव में अध्यात्म की गहन जिज्ञासु है उसको कहीं पर भी शांति नहीं मिलती। इन्हीं तथ्यों के आधार पर, हम यह कह रहे हैं की श्री

प्राणनाथ ज्ञानपीठ से बड़ा मंच पूरे विश्व में कहीं पर भी नहीं है। अगर मेरी बात पर यकीन ना हो तो एक बार अपने मन में, निष्पक्ष सोच रखते हुए विचार कीजिए और अपना रिसर्च कीजिए आपकी अंतरात्मा क्या गवाही देता है वही सत्य होगा। प्रेम प्रणाम जी।

– नीरज तोमर

***

प्रेम प्रणाम जी। १६वें वार्षिक उत्सव में तन और आत्मा से भी अत्यधिक आंनद लिया। इस बार माया की, परिवार की बिल्कुल याद भी नहीं आई। चर्चा हाल में शान्ति और सभी सुन्दरसाथ जी का सभी प्रोग्राम में बैठना और ध्यान लगाना, अति सुन्दर सारे संसार में वाणी फैलाने की तरफ बढ़ना, विश्वविद्यालय की नींव बहुत ही सुखद रहा। सभी आचार्य जी श्री स्वामी जी की मेहनत अकथनीय।

– राज रानी

***

प्रणाम जी। इस बार का वार्षिक उत्सव बहुत ही महत्वपूर्ण था और वहां पर एक दिव्य ऊर्जा का आभास हो रहा था जो आज से पहले मुझे कभी नहीं हुआ। इस बार वहां एक अलग ही प्रकार की रौनक थी। श्री राजन स्वामी जी ने जो भी चर्चा की है, आप उसको ध्यानपूर्वक सुनें। उसमें एक-एक बात अमूल्य थी। स्वामी जी जैसे सतगुरु न तो कभी हमें मिले हैं और न ही कभी हमें भविष्य में मिलेंगे। अतः उनके वचनों पर चलकर अपने जीवन को सार्थक करें।

–छवि हिमांशु यादव

***

श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ के १६वें वार्षिकोत्सव समारोह ने एक इतिहास बना दिया जो ४५० साल के इतिहास में कभी नहीं हुआ। इसका श्री प्राणनाथ ब्रह्म ज्ञान १३३ भाषा वर्ड रेकार्ड एवं श्री प्राणनाथ विश्वविद्यालय के संकल्प एक प्रमाण है। पूज्य स्वामी जी के इस संकल्प को पूरा करने में लगे १६ वर्ष में तैयार हुए श्री ज्ञानपीठ के आचार्य विद्वतगण के साथ देश-विदेश और पूरे विश्व के धर्मप्रेमी सज्जनविद और समस्त सुंदरसाथ श्री प्राणनाथ ब्रह्म ज्ञान के सत्य को धारण कर एक-एक मशाल लेकर उमड़ पड़ा। एक दिव्य ज्योति श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ के प्रांगण में फैलती हुई प्रेम की क्षण पूरे विश्व जागृति की ओर दिखाई देने लगी। १६ वें समारोह का एक-एक पल आध्यात्मिक शिक्षा में श्री प्राणनाथ ब्रह्म ज्ञान की रसधार श्री गुमट जी दरबार प्राणनाथ जी मंदिर, पन्ना जी से धर्मगुरू डॉ. पंडित जी, श्री डी.के दुबे जी, धर्मपोदेशक देवकरण गांधी जी, श्री दादा पुजारी धामी जी, श्री शर्मा जी की वाणी की वर्षा को शज्ञानपीठ में बरसते देखा। एक-एक बाजिन्त्र की धूम सितार, बांसुरी सुर-संगीत और विद्वतगण माध्यम से पूज्य स्वामी जी के इश्क भरी नजरों ने पूरे विश्व निजानंद समाज को आत्म-जागृति से सराबोर कर दिया। उपस्थित समस्त सुंदरसाथ जी के बीच मे पूज्य स्वामी जी, महामंडलेश्वर श्री कमल किशोर जी, डॉ. प्रवीण जी, आचार्य श्री चंद्रगुरू जी, महात्मा अर्जुन जी, आचार्य अशोक जी, संस्कृताचार्य विजय जी, संस्कृताचार्य सूर्य प्रताप जी, दर्शनाचार्य सुभाष जी, आचार्य शशांक जी, संन्यासी वेंकटेश जी, संगिताचार्य श्रवण और रंजित जी, बानिका प्रधान जी, विधी जी, सान्या जी, विदुषी दिप्ती जी,श्रीमती ज्योत्सना बहन जी, श्रीमती कैलाश जी और आसाम, नेपाल के सुंदरसाथ श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ युवा विद्वतगण सरसावा एवं श्री प्राणनाथ कन्या गुरुकुल, वडोदरा, समस्त श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ से जुड़े पूरी विश्व संलग्न श्री प्राणनाथ ब्रह्म ज्ञान केन्द्रों के धर्मप्रेमी सज्जनविद सुंदरसाथ जी इस कलयुग में आयी परमधाम की आत्माओं को उनके परमात्मा श्री प्राणनाथ को ज्ञात कराकर उनके दिव्य परमधाम को ज्ञात कराने में पूरा जीवन समर्पित कर रहे हैं। ऐसी सेवा के तन धन-धन है, संसार में - जो सेवा के कहे साथ, जाके धनिए पकड़े हाथ। इसी श्री ब्रह्मज्ञान प्रचार प्रसार की श्रृंखला में जुड़ा पूरे विश्व के समस्त धर्म प्रेमी सज्जनविद सुंदरसाथ जी श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ परिवार को कोटि-कोटि प्रेम प्रणाम जी।

–जयेश राठौड़

श्री प्राणनाथ कन्या गुरुकुल

अक्षरातीत श्री राजजी की अपार मेहर और श्री राजन स्वामी जी की अगुवाई में उनके द्वारा शुरु हुआ श्री प्राणनाथ कन्या गुरुकुल पिछले माह १० सितंबर को अपनी स्थापना के ८वें वर्ष में प्रवेश किया है। श्री स्वामी जी के द्वारा पुरुष वर्ग की तरह समस्त समाज की महिलाओं को भी जागनी कार्य के मुख्य प्रवाह में लाने का जब संकल्प लिया गया तो जरूरी था कि श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, सरसावा की तरह ही एक अलग प्रशिक्षण केंद्र केवल महिलाओं एव बालिकाओं के लिए भी हो। उसी विचार के फलस्वरूप श्री प्राणनाथ कन्या गुरुकुल की शुभ शुरुआत बरोड़ा (गुजरात) में २०१८ में की गई।

श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ का जो उद्देश्य है कि समस्त समाज तक तारतम वाणी के सिद्धांत और श्री प्राणनाथ जी की पहचान पहुंचाना, वही उद्देश्य श्री प्राणनाथ कन्या गुरुकुल का है। इसके साथ ही, व्यक्तित्व निर्माण के साथ-साथ चरित्र निर्माण भी है। गुरुकुल में आने वाली बालिकाएं ब्रह्मवाणी के तेज, उच्च्य रहनी के तप और तन-मन-जीव के समर्पण रूपी सिनगार से सज कर ही समाज में ब्रह्मवाणी की गूंज करने उतरें, यह इस कन्या गुरुकुल का प्रण है। इस उच्च्य सिनगार रूपी संस्कारों के सिंचन के लिए आदरणीय किरण माता जी एवं गुरुकुल की अध्यक्षा कैलाश माता जी अथक रूप से समर्पित है।

जब २०१८ में गुरुकुल शुरु किया गया तो केवल ११ बालिकाओं से शुरुआत की गई थी और आज करीब ३२ बालिकाएं विदुषी बनने के पथ पर आगे बढ़ रही हैं एवं ११ बालिकाएं अपने क्षेत्र में तारतम वाणी के प्रचार-प्रसार में लगी हुई हैं। यह समस्त कार्य श्री स्वामी जी के मार्गदर्शन और दिशा-निर्देश के अनुसार श्री प्राणनाथ कन्या गुरुकुल ट्रस्ट की देखरेख में सम्पन्न हो अपने रहा है।

कन्या गुरुकुल को समाज की नारी शक्ति के मुख्य आधार रूप एक बड़े मजबूत वट वृक्ष की तरह स्थापित करने के लिए गुरुकुल के भवन निर्माण का कार्य भी श्री राज जी की मेहर और सब सुंदरसाथ के सहयोग से अनवरत चल रहा है। यह कन्या गुरुकुल समस्त समाज का है, यहां किसी भी प्रकार की भेद की रेखा नहीं है। समाज के किसी भी वर्ग का सुंदरसाथ बेझिझक अपनी बच्चियों को गुरुकुल में धर्म प्रचार के लिए प्रशिक्षित करने के लिए भेज सकता है। कन्या गुरुकुल में आध्यात्मिक शिक्षा के साथ-साथ भौतिक शिक्षा का भी समावेश है।

श्री स्वामी जी का संकल्प है कि समाज बढ़-चढ़कर धर्म प्रचार में आगे आएगा और अपनी बालिकाओं को कन्या गुरुकुल में प्रशिक्षण लेने के लिए भेजेगा। आईए, कन्या गुरुकुल को खड़ा करने में तन-मन-धन से योगदान करके स्वामी जी के संकल्प को पूर्ण करें।

डॉ. प्रवीन जी की अमेरिका यात्रा

ब्रह्मवाणी का संदेश और आध्यात्मिक आनंद

हम अत्यंत हर्ष और आत्मिक संतोष के साथ आप सभी के साथ डॉ. प्रवीन जी की हाल की अमेरिका यात्रा का वर्णन साझा करना चाहते हैं। यह उनकी दूसरी यात्रा थी जो उन्होंने अमेरिका के सुंदरसाथ के स्नेहपूर्वक आग्रह पर ब्रह्मवाणी के पावन संदेश के प्रचार हेतु की। अपनी यात्रा के पहले दिन २१ जून २०२५ को विस्कॉन्सिन आए। यद्यपि इस दिन कोई औपचारिक कार्यक्रम नहीं था, लेकिन अनौपचारिक बैठक में उन्होंने हमारे अनेक आध्यात्मिक प्रश्नों का उत्तर सहजता और गहराई के साथ दिया, जैसे,

1. हम राजश्यामा जी से सदा कैसे जुड़े रहें ?

सबसे पहले हमें अपनी सच्ची पहचान को समझना होगा कि हम न शरीर हैं, न इंद्रियाँ, न अंतःकरण; हम तो आत्मा हैं। और जैसे ही यह पहचान स्थिर हो जाती है, हमें सदा स्मरण रहता है कि राजश्यामा जी हमारी आत्मा के प्रियतम हैं।

2. हमें किस प्रकार का भोजन करना चाहिए ?

हमें सात्त्विक भोजन करना चाहिए। शास्त्रों में कहा गया है: 'सम्यक आहार विहारस्य, यो योगः भवति दुःखहः' अर्थात् जीवन में सबकुछ संतुलन में होना चाहिए। भोजन हो या कुछ और, अति से बचना चाहिए। विस्कॉन्सिन में मुख्य कार्यक्रम २२ जून २०२५ को एक होटल के सभागार में आयोजित किया गया, जहां डॉ. प्रवीन जी ने निम्नलिखित विषयों पर प्रवचन दिया :

मैं कौन हूँ?

मृत्यु के बाद कहाँ जाते हैं?

इस शरीर में हम कहाँ से आए हैं?

हमारी आत्मा का प्रियतम कौन है?

डॉ. प्रवीन जी ने हर विषय को अत्यंत स्पष्ट, सटीक और ज्ञानपूर्ण ढंग से समझाया। इसके अतिरिक्त उन्होंने प्रणनाथ जी के स्वरूप को भी सुंदरता से समझाया जिसे सभी उपस्थित श्रोतागण ने एकाग्रता से सुना। इसके बाद, ४५ मिनट का प्रश्न-उत्तर सत्र हुआ, जिसमें डॉ. प्रवीन जी ने सभी प्रश्नों का उत्तर सरल उदाहरणों द्वारा देकर सभी को संतुष्ट किया। अगले दिन २३ जून २०२५ को शिकागो में कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमें बहुत उपयोगी चर्चा हुई। इस चर्चा में डॉ. प्रवीन जी ने निम्न विषयों पर मार्गदर्शन दिया :

कैसे भविष्य के कार्यक्रम और प्रभावशाली बनें?

वाणी प्रचार-प्रसार की तैयारी कैसे करें?

युवाओं को कैसे जोड़ें और प्रशिक्षित करें?

उनकी उपस्थिति हमारे लिए एक आध्यात्मिक अनुभूति रही। २४ जून २०२५ को मिशिगन में हुए कार्यक्रम में सिनगार ग्रंथ की चौपाई,

एता मता तुम को दिया, सो जानत है तुम दिल।
बेसक इलमें ना समझे, तो सहूर करो सब मिल ।।

पर चर्चा हुई जो बहुत हृदयस्पर्शी थी जिसमें बताया कि ज्ञान का उदेश्य क्या है और ज्ञान मिलने के बाद भी हमारे जीवन मे परिवर्तन क्यों नहीं आता? हमें विचार करना चाहिए की आखिर हमारे अंदर कमी क्या है? इसके पश्चात् २६ जून २०२५ को इंडियानापोलिस में तीन दिन के प्रवास के दौरान डॉ. प्रवीन जी ने बच्चों और युवा सुन्दरसाथ के साथ विभिन्न आध्यात्मिक प्रश्नों का निवारण किया। सांयकाल किरन्तन ग्रंथ की निम्न चौपाई,

वृथा कां निगमो रे, पामी पदारथ चार।
उत्तम मानखो खंड भरथनों, सृष्ट कुली सिरदार ।।

पर हुई चर्चा में उसमें बताया की हमें मनुष्य तन, भरतखंड की भूमि, २८वां कलयुग और सबसे बड़ा ब्रह्मसृष्टियों की सानिध्यता मिलने पर भी हम समय कहाँ गवा रहे हैं? उन्होंने मानव तन की महत्ता बताई। इसके बाद ओहायो में हुए कार्यक्रम में किरन्तन वाणी की निम्न चौपाई,

रे मन त्रिखा न बूझे तेरी झांझुए, प्रतिबिंब पकरयो न जाए।
ज्यों जलचर जल बिना ना रहे, जो तूं करे अनेक उपाए ।।

पर हुई चर्चा में डॉ. प्रवीन जी कहा की हमारी भागदौड़ का कारण क्या है? ये भागदौड़ भेड़े की चाल की तरह है। हमारा समय वैसे ही चला जा रहा है। बेहोशी में जी रहा है। परमात्मा ने हमारे लिए सारी व्यवस्था की है लेकिन केवल धनी के पास बैठने के लिए समय नहीं है। इसके बाद आगे के कार्यक्रम में सिनगार ग्रंथ की निम्न चौपाई,

हादी मिल्या बोहोतों को, कोई ले न सक्या हादी चाल।
चलना हादी का सोई चले, जो होवे इन मिसाल ।।

पर हुई चर्चा में डॉ. प्रवीन जी ने कहा कि हमारे पास हमारा क्या है जो हम अपने प्राणेश्वर को दे सकते है? वो है हमारा हृदय जो हम उनको दे सकते है! हम सबके अंदर उनका ही नूर तेज है।

अंत में, समस्त अमेरिका के सुंदरसाथ ने डॉ. प्रवीन जी का आभार प्रकट किया जिन्होंने अपना अमूल्य समय प्रदान किया। आईए, हम सभी राजश्यामा जी की वाणी के पथ पर चलते रहें, आत्मा के रूप में स्थिर होकर, प्रेम और सरलता से सेवा करते रहें।

प्रणाम जी !

–अमेरिका सुन्दरसाथ

विनम्र निवेदन

धाम धनी के लाडले सुन्दरसाथ जी! वर्तमान समय में श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ सरसावा में शिक्षण, साहित्यिक एवं निर्माण कार्य तेजी से चल रहा है। जिन सुन्दरसाथ ने इन कार्यों के लिए अपनी सेवाएं लिखवायी है या स्वतः उनके मन में सेवा करने की इच्छा है, कृपया वे इन खातों में धनराशि भेजने का कष्ट करें। इस बात का ध्यान रखा जाय कि जिस सेवा की धनराशि भेजी जा रही है, मात्र उसी खाते की **C.B.S. A/C** संख्या में भेजें।

प्रणाम जी

1. खाताधारक का नाम – श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ ट्रस्ट
   खाता संख्या – **3290805513**

2. खाताधारक का नाम – श्री प्राणनाथ ज्ञान केन्द्र, पन्ना
   खाता संख्या – **3759122888,**

सेण्ट्रल बैंक ऑफ इण्डिया,
पता : शाखा–सरसावा, सहारनपुर, उ.प्र. – **247232**
MICR Code - 241016005
IFSC Code - CBIN0282531

सेण्ट्रल बैंक ऑफ इण्डिया,
पता : शाखा – पन्ना
IFSC Code CBIN0282158

सामान्य खाता संख्या
1335000100111916
पंजाब नेशनल बैंक
सलेमपुर (सहारनपुर) उ.प्र.
RTGS/NEFT IFS
CODE - PUNB0133500

साहित्य खाता संख्या
1335000100118751
पंजाब नेशनल बैंक
सलेमपुर (सहारनपुर) उ.प्र.
RTGS/NEFT IFS
CODE - PUNB0133500

भवन निर्माण खाता संख्या
34971188767
भारतीय स्टैट बैंक
(11439) सरसावा, सहारनपुर
उत्तरप्रदेश, पिन– 247232
IFS CODE- SBIN0011439

श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, सरसावा से प्रकाशित साहित्य की सूची

क्र. सं.	ग्रन्थ का नाम	न्योछावर
01	श्री कुलजम स्वरूप	550
02	श्री बीतक साहिब टीका	400
03	बीतक चर्चा	350
04	रास ग्रन्थ टीका	180
05	प्रकाश ग्रन्थ टीका	400
06	खटरूती ग्रन्थ टीका	100
07	कलश ग्रन्थ टीका	230
08	सनन्ध ग्रन्थ टीका	300
09	किरन्तन ग्रन्थ टीका	300
10	खुलासा ग्रन्थ टीका	250
11	खिलवत ग्रन्थ टीका	250
12	परिक्रमा ग्रन्थ टीका	330
13	सागर ग्रन्थ टीका	230
14	सिनगार ग्रन्थ टीका	400
15	सिन्धी ग्रन्थ टीका	100
16	मारफत सागर ग्रन्थ टीका	180
17	कयामतनामा ग्रन्थ टीका	160
18	किरन्तन (अंग्रेजी में) ग्रन्थ टीका	350
19	किरन्तन (नेपाली में) ग्रन्थ टीका	300
20	परमधाम पट्दर्शन	650
21	परमधाम पट्दर्शन (गत्तेवाली)	700
22	पुराण संहिता	200
23	विद्वद्दमनी	200
24	कलश टीका (नेपाली में)	150
25	भ्रान्ति नाशनम्	80
26	श्री मुखवाणी संगीत (छोटी)	70
27	खाद्य परिशीलन	250
28	निजधाम दर्शन	150
29	रूपान्तरण (युगलदास जी–बड़ी वृत्त)	100
30	आर्ष ज्योति	120
31	चितवनि रहस्य	80
32	तारतम पीयूषम्	70
33	तारतम के निर्झर	70
34	ध्यान की पुष्पांजलि	70
35	सत्यांजलि	80
36	मूल स्वरूप की ओर	80
37	चितवनी महिमा	80
38	हमारी रहनी	50
39	प्रेम का चाँद	80
40	दोपहर का सूरज	80
41	महजरनामा	80
42	नित्य पाठ (बड़ी)	30
43	मांसाहार (विनाश का पर्याय)	80
44	ब्रह्मवाणी चर्चा	65
45	हमारी शाश्वत सम्पदा	60
46	निजानन्द योग (बड़ी)	70
47	झूठ ही झूठ	60
48	कड़वे सच	50
49	ज्ञान मन्थन	50
50	विराट–नक्शा (कैलेण्डर रूप में)	50
51	संस्कार पद्धति	70
52	गागर में सागर	50
53	प्राणनाथ महिमा (नई)	40
54	बीतक से शिक्षा	40
55	ब्रह्माण्ड रहस्य	60
56	स्वास्थ्य के प्रहरी	40
57	तमस् के पार (बड़ी)	40
58	शब्दातीत शब्दों में	50
59	सेवा पूजा	30
60	ज्ञान मंजूषा	30
61	यथार्थ दीपिका	30
62	भागवत यथार्थम्	30
63	निजानन्द चित्र कथा	30
64	तमस् के पार (छोटी)	20
65	निजानन्द योग (छोटी)	20
66	अन्धकार देखि पारि / नेपाली	70 / 110
67	संसार से परमधाम की ओर	20
68	सत्य को बाटो (नेपाली में)	15
69	बोध मंजरी (हिन्दी)	15
70	बोध मंजरी (उड़िया)	15
71	चितवनी मार्ग दर्शन	10
72	चितवनी	10
73	नित्य पाठ	10
74	तारतम्य सुधा (भाग–1)	60
75	तारतम्य सुधा (भाग–2)	60
76	शाश्वत सत्य की ओर	10
77	सुबोध बाल बीतक	150
78	प्रश्न माला	5
79	मीर जी शेख जी का बयान	20
80	सोवं कयामतनामा (तीसरा कयामतनामा)	90
81	बुलन्द मुकदमा	40
82	हयातुनबी	40
83	मुख्तारे–हिन्द	20
84	अफलातूनी इलम	20
85	शब–ए–मेयराज	15
86	Food For Thought	250
87	Mystic Universe	80
88	Descent of the Absolute Divine	80
89	Get Introduced to Nijanand School	120
90	Darkness to Brightness	60
91	Chess of Mystic Spiritual Knowledge	25
92	Pearls of Spiritual Wisdom	30
93	Nijanand Meditation	60
	निजानन्द योग अंग्रेजी (बड़ी)	
94	परमधाम विलास	60
95	Supreme Truth God	30
96	वर्णाश्रम	70
97	जागनी सुधा (भाग–1)	80
98	जागनी सुधा (भाग–2)	80
99	जागनी सुधा (भाग–3)	90
100	गीतादर्शनम्	60
101	सौन्दर्य–सिन्धु (भाग–1)	70
102	सौन्दर्य–सिन्धु (भाग–2)	80
103	जातिवाद	30
104	Shri Nijanand Swami	100
105	Elixir of Enlightenment	30

प्रकाशन कार्यालय

श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ

नकुड़ रोड, सरसावा, जिला सहारनपुर-247232 (उ.प्र)

मोबाइल नं: 7088120381

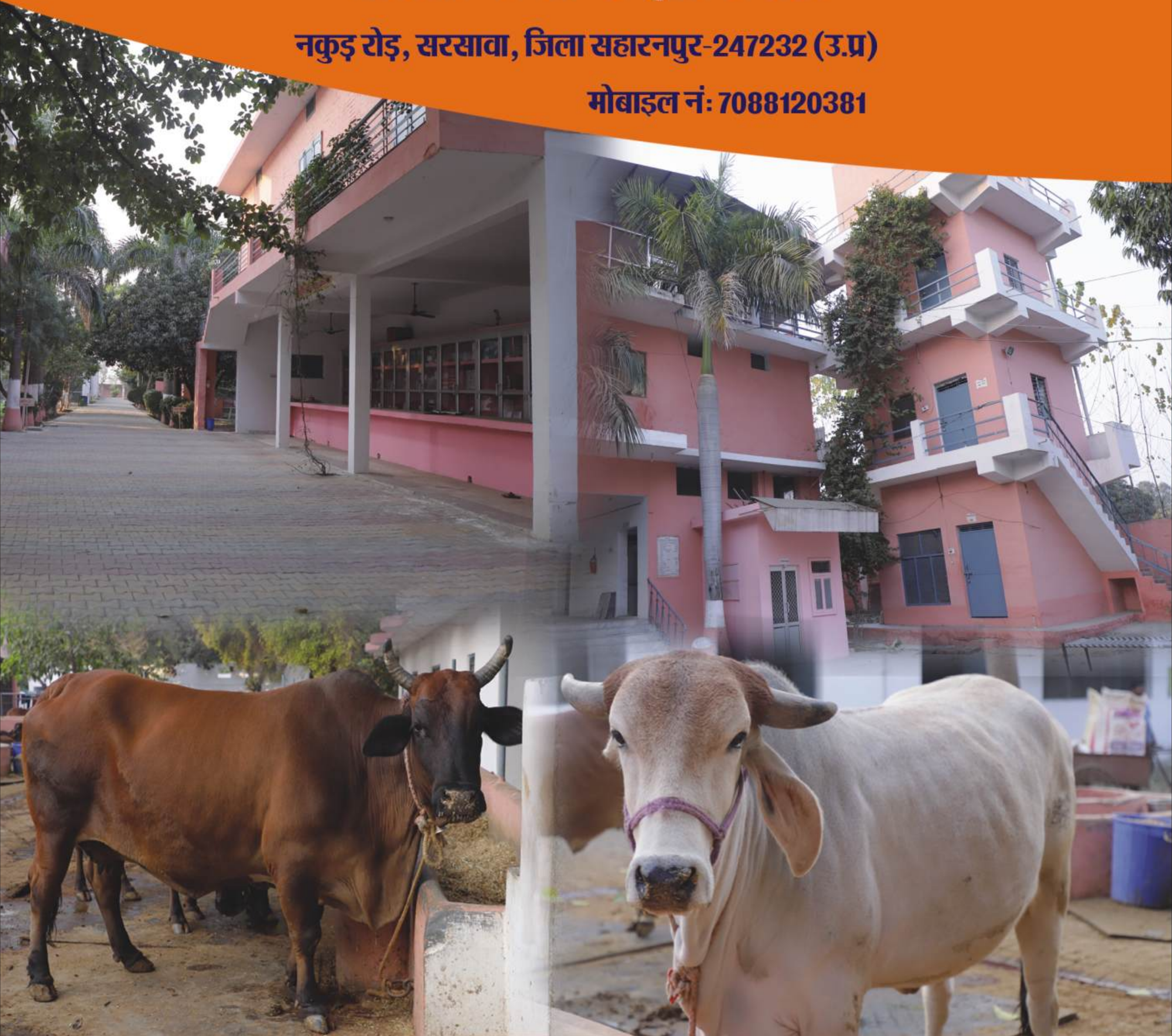

बुक पोस्ट

RNI: UPHIN/2016/46009
RNP/SHN/18/2025-27

सेवा में